वर्ष २ अंक १३
विक्रम संवत् २०७६ अश्विन
अक्तुबर २०१९

आर्ष क्रान्ति

वैदिक समाज व्यवस्था के लिए समर्पित

महर्षि दयानन्द विशेषांक

प्रेरणा, ज्ञान, विद्या और ज्योती पर्व दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएँ

जो अमरदीप बनकर चमका,
उस दिव्य दयानंद के महाप्रयाण दिवस पर हम संकल्प लेते हैं
- कृण्वंतो विश्वमार्यम के पथ पर, जीवन अर्पित करते हैं,
आओ हम संकल्प करें, मानवता को अमर बनाएँ,
समाज में छाए अंधकार को मिलकर दूर भगाएं

ओ३म्

आर्य लेखक परिषद् का मुख पत्र

आर्ष क्रान्ति

अक्टूबर २०१९

वर्ष–२ अंक–१३,
विक्रम संवत् २०७५
दयानान्दाब्द– १९५
कलि संवत् – ५११९
सृष्टि संवत् –१,९६,०८,५३,११९

प्रधान सम्पादक
वेदप्रिय शास्त्री
(७६६५७६५११३)
❖
समन्वय सम्पादक
अखिलेश आर्येन्दु
(८१७८७१०३३४)
❖
सह सम्पादक
प्रांशु आर्य (कोटा)
(९९६३९७०९४०)
❖
आकल्पन
प्रवीण कुमार (महाराष्ट्र)
❖
सम्पादकीय कार्यालय
ए–११,त्यागी विहार, नांगलोई,
दिल्ली–११००४१
चलभाष– ८१७८७१०३३४

अनुक्रम

विषय

१ आर्य (सम्पादकीय)
२ महर्षि दयानंद का अंतिम सन्देश
३ भारतीय इतिहास लेखन.....
४ अबकी बार दीवाली में
५ Dayanand: One in 25 Centuries
६ देवपीयु और देवबंधु कौन ?
७ सत्यार्थ प्रकाश : क्या और क्यों
८ रिफॉर्मर (सुधारक)
९ दीपावली पर सफाई
१० आई दीवाली
११ दीप घर–घर में जलाओ
१२ महर्षि दयानन्द : समाज, वेद.....
१३ दीपावली संदेश
१४ कौन था वह व्यक्ति ?
१५ महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में.....
१६ दीवाली और दयानन्द

ईमेल – aryalekhakparishad@gmail.com
वेबसाइट – https://aryalekhakparishad.com/
फेसबुक – आर्य लेखक परिषद्

Digital

आर्य

वैदिकों की यह मान्यता है कि संसार के सभी पदार्थों के नाम वेद के शब्दों से रखे गए हैं। यथा –

सर्वेषाम् च नामानि कर्माणि च पृथक् पृथक्।
वेद शब्देभ्यः एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे ।।

वेद में भी भाषा की उत्पत्ति नामकरण के साथ ही कही गई है यथा –

बृहस्पते प्रथमंवाचो अग्रंयत् प्रैरत
नामधेयम् दधाना ।। ऋग्वेद ।।

वेदों में जो शब्द प्रयुक्त हुए हैं वे सब गुण वाची हैं, रूढि न होकर यौगिक हैं ; अर्थात् एक शब्द अनेक अर्थ देता है। वेद का प्रत्येक पद किसी धातु से निर्मित होता है। एक धातु के अनेक अर्थ हैं। अतः उससे निर्मित शब्द के भी अनेक अर्थ होते हैं। यथा– देव और यज्ञ शब्द को ही लें। देव का अर्थ – दानी, प्रकाशक, मार्गदर्शक, विद्वान,उच्चपदस्थ आदि लगभग पच्चीस अर्थ हैं। इसी प्रकार यज्ञ शब्द यह तो अनेक धातुओं से बनता है इसलिए इसके भी अनेक अर्थ हैं।

इसी प्रकार आर्य शब्द है। वेदों में यह गुणवाची शब्द है, जातिवादी नहीं है। आर्य शब्द का मूल उपादान है 'ऋ'। 'ऋ गतौ' अर्थात् ऋ का अर्थ गति है। इसलिए यह जिस वर्ण के साथ लग जाता है उसे गत्यर्थक बना देता है यथा – कृ, गृ, घृ, मृ, धृ, सृ आदि।

अब 'गतेस्त्रयौर्था भवन्ति' गति के तीन अर्थ हैं ज्ञानम्, गमनम्, प्राप्तिश्च – ज्ञान, गमन और प्राप्ति। अतः आर्य शब्द का अर्थ भी प्रगतिशील, कर्मशील, ज्ञानी और उपार्जक, श्रमशील आदि होता है। भ्वादिगण में पठित **'ऋ गतौ'** धातु से **'यत्'** प्रत्यय लगाकर आर्य शब्द बनता है। इसके अतिरिक्त **'ण्यत्'** प्रत्यय लगाकर भी बनता है। इसी प्रकार **'अर्यः'** शब्द में अपत्य अर्थ में आर्य शब्द बनता है यथा – **'अर्यः स्वामि वैश्ययोः' तस्यापत्यम् आर्यः ईश्वर पुत्रः – स्वामी अथवा वैश्य का पुत्र।** इस प्रकार आर्य शब्द भाव वाचक भी है और कर्म वाचक तथा अपत्यार्थक भी है। इसलिए वेदों में यह विशेषण और विशेष्य दोनों ही अर्थों में प्रयुक्त है। इस प्रकार आर्य का अर्थ होता है श्रेष्ठ, सद्गुणी, सदाचारी, श्रमशील, पराक्रमी, वीर, ऐश्वर्य संपन्न, कुलीन, ज्ञान पूर्वक परिश्रम करके प्राप्ति करने वाला और दुष्ट, दुराचारी, कामचोर, लुटेरों, चोरों का निर्भयता के साथ सामना करके उनका दमन करने वाला इत्यादि। वेदों में आर्य शब्द इन्हीं अर्थों में प्रयुक्त हुआ है। मनुष्यों ने जब अपने लोगों, पदार्थों और संस्थाओं के नाम रखने की आवश्यकता समझी, तब वेद में से ही अपने लिए उपयुक्त शब्द लेकर नामकरण किया। किसी ने स्वयं को देव कहा, किसी ने असुर कहा, किसी ने भूत नाम स्वीकारा, किसी ने आर्य। इसी प्रकार अपने निवास स्थानों को भी देवलोक, भूतलोक, असुर लोक और आर्य लोक आदि नाम दिए। मनुष्यों के एक वर्ग ने स्वयं को आर्य कहलाना पसंद किया और अपने निवास स्थान को आर्यावर्त सम्बोधन प्रदान किया।

वैदिक साहित्य और बौद्ध तथा जैन साहित्य में भी आज तक आर्य शब्द श्रेष्ठ, सम्मानीय सज्जन पुरुष के अर्थ में प्रयुक्त पाया जाता है । इसीलिए वेदों में किसी आर्य जाति का वर्णन नहीं है। वहाँ आर्य– दस्यु, देव–असुर आदि का वर्णन गुण, कर्म के आधार पर आता है। जैसे शोषक– शोषित, कमेरा–लुटेरा, पूँजीवादी–समाजवादी आदि, परन्तु इस आर्य शब्द को योजनाबद्ध ढंग से गुणवाची से बलात् जातिवाची बनाया गया। एक झूठा इतिहास गढ़ा गया। आर्यों को आक्रांता और बाहर से आकर यहां बसने वाले तथा यहाँ के मूल निवासियों को गुलाम बनाने और प्रताड़ित करने वाले बताया गया। वेद मंत्रों का अनर्थ करके बलात् इस मान्यता को सत्य सिद्ध करने का असफल प्रयास किया गया। आज भी कुछ लोग इसके आग्रही होकर हो हल्ला मचा रहे हैं।

सच्चाई यह है कि अंग्रेजों से लेकर आज तक जो लोग भी इस कार्य में लगे हैं उनमें से कोई ऐसा नहीं हुआ जो वेद की भाषा समझता हो अथवा संस्कृत भी ठीक ठीक जानता हो। वर्तमान में जो लोग इस झूठ को प्रचारित कर रहे हैं वह बिके हुए लोग हैं जो किसी भारत विरोधी संस्था के संकेतों पर नाचते हैं। यह लोग जिनको अपना हीरो और आदर्श मानते हैं वे

प्रायः अंग्रेज समर्थक, स्वतंत्रता संग्राम के विरोधी रहे हैं।

कुछ लोग ऐसे भी जोड़ रखे हैं जो इनके विचारों के समर्थक कदापि नहीं थे, दिखावें के लिए अपनी नीचता को ढकने के लिए उन्हें अपनों में गिनते हैं। जैसे शिवाजी, कबीरदास जी, संत रविदास, गौतम बुद्ध और बाबा साहब अम्बेडकर आदि। इनमें से कोई भी आर्यों को विदेशी और शूद्रों को आर्येतर नहीं मानता। जहाँ तक बौद्ध धर्म की बात है तो उसमें तो प्रतिशोध और हिंसा के लिए कोई स्थान नहीं है। जबकि इन तथाकथित मूल निवासियों में प्रतिशोध और हिंसा का भाव स्पष्ट छलक रहा है। इन्हें यह भी पता नहीं कि डॉक्टर भीमराव अम्बेडकर जी का इस्लाम और मुसलमानों के बारे में क्या दृष्टिकोण था? गुरु गोविंद सिंह जी का क्या विचार था? सब कुछ जानते हुए कुछ मुसलमानों, मजहबी सिक्खों और खालिस्तान समर्थकों को साथ लेकर उपद्रव करना बौद्ध धर्म के साथ कितना मेल खाता है? बहुजन भाइयों को इस पर विचार करना चाहिए। कहीं ऐसा न हो कि जो शेष है उससे भी हाथ धोना पड़े।

हम यह नहीं कहते कि आप अपने अधिकारों के लिए लड़ें नहीं। लड़िए परन्तु इतिहास का गला घोंटकर और गैरों के हाथ की कठपुतली बनकर न लड़िए। जहाँ तक उत्पीड़न, शोषण, अन्याय और अत्याचार का प्रश्न है तो संसार में ऐसा कौन सा देश है जहाँ यह सब नहीं हुआ और हो रहा है। मानवी इतिहास में कोई काल ऐसा नहीं मिलेगा जब बलवानों ने निर्बलों को न सताया हो, स्वत्वहीन न किया हो। राजतंत्र का निर्माण भी इसी समस्या के निराकरण हेतु किया गया था परन्तु जब वही न्याय न कर अन्याय करने लगे तब क्या किया जाए? आप लोग ऐसा नहीं करेंगे इस पर कैसे विश्वास करें ?

अब रही मनुस्मृति और मनु के अनादर की बात, सो बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर से भी पहले स्वामी दयानन्द उस मनु और उसकी उस स्मृति को नकार चुके हैं जिस पर दलितों को आपत्ति है। स्वामी दयानन्द ने जिस मनु की बात की है वह तो बिल्कुल निर्दोष है। आर्य समाज ने अपने इस मनु के अनुसार वह सब कुछ किया है जो न अम्बेडकर जी कर सके और न कोई दलित नेता कर सके।

आज आर्य समाज ने सैकड़ों शूद्रों और अति शूद्रों, भीलों आदि में उत्पन्न लोगों को ब्राह्मण बनाकर पुरोहित पद पर बिठा रखा है। अनेक सवर्णों ने उन्हें अपनी बेटियाँ स्वेच्छा से ब्याह दी हैं। परन्तु दलित लोग जिस मनु का विरोध कर रहे हैं आज तक उसे अपने अंदर से निकाल नहीं सके और आगे भी नहीं निकाल पाएंगे। जितना छूत–छात, ऊंच–नीच, जात–पात इन दलितों में हैं उतना सवर्णों में भी नहीं है। इसलिए यह लोग कदापि सफल नहीं होंगे। दलित नामधारी जिस ब्राह्मणवाद का रोना रोते रहते हैं स्वामी दयानंद ने उस ब्राह्मणवाद की अर्थी अम्बेडकर जी से बहुत पहले ही निकाल दी थी। संस्कृत भाषा और वेद को ब्राह्मणों की बपौती से मुक्ति दिला दी थी। परिणाम स्वरूप ब्राह्मणेतर सभी जातियों के लोग आज शास्त्री, आचार्य बने हजारों की संख्या में घूम रहे हैं और कोई भी बेरोजगार नहीं है। करोड़ों लोगों ने ब्राह्मणवादी कर्मकाण्ड को सदा के लिए तिलांजलि देकर वैदिक कर्मकाण्ड अपना लिया है।

मूलनिवासी का राग गाकर और ब्राह्मणों को कोस कर दलितों को कुछ मिलने वाला नहीं है। मूलनिवासी तो आर्य ही हैं और आर्य भाषा ही मूल भाषा है। आर्यों ने सारे संसार को विद्या और चरित्र सिखाया है। गौतम बुद्ध, सम्राट अशोक, धनानंद, चंद्रगुप्त आदि सभी आर्य थे, असुरों के गुरु शुक्राचार्य भी ब्राह्मण थे, रावण भी ब्राह्मण था। कोई एक भी प्रमाण तथाकथित दलितों को मूलनिवासी सिद्ध करने के लिए नहीं है। कथित शूद्र भी आर्यों के एक वर्ण में से ही हैं, आर्येतर कदापि नहीं।

वैदिक वर्ण व्यवस्था भी गुण–कर्म के आधार पर किया गया मानवीय नियोजन है, उसमें किसी प्रकार के शोषण, पक्षपात, ऊँच–नीच के लिए कोई स्थान नहीं है। अतः समय रहते आर्य आचार और चरित्र को

स्वीकार करें और एक स्वस्थ समाज की संरचना में सहयोगी बनें। इसी में सबका कल्याण है। विधर्मियों और देश विरोधी शक्तियों से पोषण प्राप्त करके, उनके एजेंट के रूप में कार्य करने वाले लोगों से बचकर रहें। एक दूसरे के महापुरुषों का अनादर करने से बचें। हम परस्पर लड़ेंगे और लाभ कोई तीसरा उठाएगा।

दलितों के अतिरिक्त एक और वर्ग भी है जिसे आर्य शब्द पसंद नहीं है, वह हिन्दू शब्द का आग्रही है। इस वर्ग ने भी स्वामी दयानन्द की बात नहीं मानी। इस वर्ग में वे लोग आते हैं जिनके पूर्वजों ने अंग्रेजों की गुलामी की, उनके कमीशन एजेंट बनकर आमजनों का शोषण और प्रतारण किया, बदले में जागीरें, जमीदारियाँ, तमगे, उपाधियाँ लेकर राष्ट्र के साथ सदा गद्दारी की। इनमें नस्ली अहंकार कूट–कूट कर भरा हुआ है। वर्तमान में यही पूंजीपतियों की दलाली करते हैं। ये लोग मेहनत से जी चुराने वाले मुफ्तखोर अन्यों के श्रम पर पलने वाले शोषक और लुटेरे हैं फिर भी अपने को उच्च और प्रतिष्ठित कहते हैं। इनके साथ मुफ्तखोर, चरित्रहीन तथाकथित साधु–सन्तों की जमात है जिसने आम जनता की नाक में दम कर रखा है। इन साधु–संतों को भी आर्य शब्द और स्वामी दयानन्द से भारी घृणा है। स्वामी दयानन्द ने जिन्हें पाखंडी कहा है ये वही लोग हैं। नशीले पदार्थों की तस्करी, सेक्स रैकेट चलाना, काले धन को सफेद करना, अफवाहें फैलाना, दंगे कराना आदि इनके मुख्य कार्य हैं।

खेद तो इस बात का है कि इस कम्पनी ने गुंडागर्दी करके आर्य समाज की प्रचुर सम्पत्ति हथिया ली है और कुछ तथाकथित हिन्दूवादी आर्य इनका साथ दे रहे हैं। आर्य समाज को सबसे अधिक हानि इन दोगले आर्यों से ही हुई है। ये नस्ली अहंकार और उच्चता का ढोंग करने वाले हैं और स्वामी दयानन्द के साथ गद्दारी करने वाले हैं। परन्तु **मेरी घोषणा है कि जो भी दयानन्द के साथ गद्दारी करेगा वह दोहरी मौत मरेगा। बच नहीं सकता।**

विजानीहि आर्यान् ये च दस्यवः

– वेदप्रिय शास्त्री

महर्षि दयानंद का अंतिम सन्देश

यूँ न तुम अधीर होकर आँसू बहाओ आर्यो।

यह नियम अटल है प्रभु का जन्मा जो वो मरेगा,
है हर एक विवश यहाँ पर, जो करेगा वह भरेगा,
नश्वर मेरी काया पे न आँसू बहाओ आर्यो ।
यूँ न तुम अधीर होकर........... ।१।।

कहीं तुम न ये समझना कि मैं मर रहा हूँ मर कर,
मैं सदा रहूँगा संग में, वैदिक विचार बनकर
यह आत्मा अमर है, न आँसू बहाओ आर्यो ।
यूँ न तुम अधीर होकर........... ।।२।।

मेरी याद में बनाना, न कहीं मजार कोई,
मेरे बाद में न करना, प्रतिमा प्रचार कोई,
वैदिक चिता जलाओ, न आंसू बहाओ आर्यो ।
यूँ न तुम अधीर होकर........... ।।३।।

मेरे पीछे आ खड़े हो सभी द्वार खोल दो तुम,
जय एक ईश की सब मिल करके बोल दो तुम,
हां समाज को उठाओ ,न आंसू बहाओ आर्यो ।
यूँ न तुम अधीर होकर........... ।।४।।

है एक 'वेदप्रिय' ही अनमोल निधि तुम्हारी,
मिट जाएंगी इसी से सब व्याधियाँ तुम्हारी,
पाखण्ड को मिटाओ, न आंसू बहाओ आर्यो ।
यूँ न तुम अधीर होकर........... ।।५।।

– वेदप्रिय शास्त्री
सीताबाड़ी, केलवाड़ा

भारतीय इतिहास लेखन : वास्तविकता और तर्क की कसौटी के पैमाने

– अखिलेश आर्येन्दु

पाठकवृंद! पिछले अंक में आप ने पढ़ा कि पुरातत्त्व के साक्ष्यों और प्रमाणों के आधार पर जिन–जिन सभ्यताओं के सांस्कृतिक, धार्मिक, बौद्धिक, राजनैतिक, भौगोलिक, कला–धर्म और शिक्षादि के सम्बन्ध में श्रृंखलाबद्ध रूप में मैंने समीक्षा की उससे यह बात सामने आई कि सभ्यताओं के इतिहास के लिए वेद–वेदांग, महाभारत, रामायण, पुराण और अन्य संस्कृत ग्रंथों को तथ्य या प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है, इससे कई तरह की भ्रांतियों, शंकाओं और प्रश्नों का जन्म होता रहा है। मेरा प्रयास रहा है कि उपलब्ध पुरातात्त्विक इतिहास को तर्क और इतिहास–प्रमाण की कसौटी पर कसकर यह देखा जाए कि उपलब्ध सभ्यताओं का इतिहास कितना इतिहास है और कितना गल्प या अनुमान। मेरे दृष्टि में उपलब्ध पुरातात्त्विक इतिहास को फिर से समीक्षा के दायरे में लाने की आवश्यकता है। इससे कई लाभ होंगे। इसमें सबसे बड़ा लाभ यह है कि प्रचलित इतिहास लेखन के तौर–तरीकों और प्रमाणों की प्रमाणिकता को तर्क, तथ्य और प्रमाणों के आधार पर कसकर सत्य को प्रमाणित करने और मानने–मनवाने में सहायता मिलेगी। स्पष्ट है पुरातात्त्विक इतिहास लेखन में अनुमान और कल्पना के सहारे लिखे गये इतिहास की प्रमाणिकता ही संदिग्ध हो जाती है। इसके बावजूद जो पुरातात्त्विक इतिहास हम पढ़ते हैं उससे यह पता चलता है कि सभी सभ्यताएं अत्यंत विकसित और प्रगतिगामी थीं।

– समन्वय सम्पादक

हम जो इतिहास पढ़ते हैं –

ध्यान देने योग्य बात यह है कि स्वतंत्रता के उपरान्त हम जिस इतिहास को पढ़ते आ रहे हैं वह इतिहास कई तरह की शंकाओं, भ्रांतियों और प्रश्नों को जन्म देना वाला है। विडम्बना यह कि इतिहास से सम्बन्धित शंकाओं, भ्रांतियों और प्रश्नों का समाधान करने का कोई प्रयास सही तरीके से किया ही नहीं गया। इस ओर सत्य, ज्ञान और शुभ की स्थापना के लिए रत विद्वतजनों को बिना विलम्ब किए आगे आना चाहिए। केद्र या राज्य शासन के भरोसे ऐसा बड़ा कार्य नहीं किया जा सकता।

प्रस्तुत श्रृंखला लेख पुरातात्त्विक धारा से हटकर उस धारा से सम्बन्धित है जो इतिहास की मूल धारा कहलाती है। आप पाठकवृंद, प्रस्तुत लेख को गम्भीरता से पढ़ें और बताएं, आप को यह लेख कैसा लगा।

लेखन के कसौटी के पैमाने

अनेक प्रमाणों और शोधों से यह प्रमाणित हो चुका है कि जिस इतिहास को हम 'भारत का इतिहास' मानते हैं, वह विशेष उद्देश्य को लेकर योजनाबद्ध रूप से ऑक्सफोर्ड के विद्वानों का रचा हुआ है। इसके मद्देनजर विदेशियों ने –जिसमें इतिहासकार, विद्वान्, राजनेता और ईसाई पादरी सम्मिलित थे ने मिलकर एक साजिश रची। इस साजिश के पीछे उनका एक विशेष उद्देश्य था जिसमें भारतीयों का उद्धार करने की आड़ में अपने साम्राज्य (अंग्रेजी शासन) का निर्माण करना था। यह भी जानना आवश्यक है कि अंग्रेजों ने एक योजनाबद्ध रूप में अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए वे सभी कार्य किए जो राजसत्ता निर्माण के लिए आवश्यक थे। दूसरी बात, अंग्रेजों का उद्देश्य भारत में शासन की बागडोर अपने हाथ में लेना ही नहीं था बल्कि ईसाइत के प्रचार से भारत का उद्धार करने के षड्यंत्र रचने के उत्सुक अंग्रेजों के लिए यह सिद्ध करना आवश्यक था कि भारत के लोग सदा से बर्बर और असभ्य रहे हैं। इसके पीछे कारण यह था कि यदि भारतीयों को सभ्य मान लिया तो उन्हें सभ्य बनाने का उनके दावे का कोई मतलब नहीं रह जाता। अंग्रेजों ने सबसे पहले भारतीय राजाओं की कमजोरियों को समझा और एक–एक करके सभी राजाओं को साम–दाम–दण्ड–भेद का सहारा ले, उन्हें हराने में सफलता

प्राप्त की। 1757 में प्लासी के युद्ध जब अंग्रेजों को सफलता प्राप्त हुई तब उन्हें लगने लगा था वे पूरे भारतीय भू–खण्ड पर एक दिन अपना साम्राज्य स्थापित करने में सफलता प्राप्त कर लेंगे। इतिहास बताता है कि प्लासी के युद्ध के कुछ दिन बाद ही लॉर्ड मेकाले ने अपने मित्र मिस्टर राउस को एक पत्र लिखा था जिसे हर भारतीय को जानना जरूरी है। मेकाले ने लिखा था–''अब केवल नाममात्र नहीं, हमें सचमुच नवाब बनना है और वह भी कोई पर्दा रखकर नहीं, खुल्लमखुल्ला बनना है।''गौरतलब है इस योजना (पूरे भारत पर राज्य करने) के तहत ही 1899 में आर्थर ए. मैकडानल ने 'संस्कृत साहित्य का इतिहास लिखा। जिसमें उन्होंने एक षड्यंत्र और शरारत के तहत यह सिद्ध करने में सफल रहे कि भारत सदा हारने वाला देश है। और भारतीयों की मानसिक दासता का लाभ लेकर अंग्रेजों ने जिस भारतीय इतिहास की रचना कि वह भारत को किसी भी रूप में सर्वसम्पन्न, विद्या–प्रसारक, धन–वैभव से सम्पन्न, धर्मप्राण, सांस्कृतिक व शैक्षिक चेतना का केंद्र सिद्ध नहीं करता।

अर्थात् अंग्रेजों ने जिस तथाकथित भारतीय इतिहास की रचना की वह भारत को हर तरह से पिछड़ा हुआ, अज्ञानी, दरिद्र और लाचार देश ही साबित करता रहा है।

मेकाले और अन्य अंग्रेज जो भारत को अत्यन्त पिछड़ा हुआ देश सिद्ध करने के लिए अनेक तरह के षड्यंत्र और शरारते कीं और विदेशी विद्वानों को इसके लिए तैयार भी किया, जिसने सोची–समझी नीति और चाल के साथ कार्य किया, उसकी निष्पक्ष विवेचना और समीक्षा करने के बजाय वामपंथी और अन्य भारतीय इतिहासकारों ने मेकाले और अन्य विदेशी विद्वानों और पादरियों की कहीं हुई बातों की मात्र पुष्टि ही नहीं की, बल्कि उसे प्रमाणित करने के लिए अंग्रेजों ने जो काल्पनिक बातों का सहारा लिया था उसे ही प्रमाण के रूप में माना। दूसरी बात। मेकाले की सलाह से अंग्रेज आर्थर ए.मैकडालन ने 1899 में 'संस्कृत साहित्य का इतिहास' नामक पुस्तक में भारत, भारत की संस्कृति, धर्म, शिक्षा, समाज, साहित्य, कला, इतिहास के सम्बन्ध में ऐसी काल्पनिक बातें लिखीं जो किसी तरह मान्य नहीं हो सकतीं को ही भारतीय इतिहासकारों ने अपने इतिहास लेखन का आधार बनाया। और अंग्रेजों ने वेद में इतिहास खोजने का जो प्रयास किया उसके मूल में वेद भाष्यकार सायण का भाष्य है जिसमें वेद में आए शब्दों को 'व्यक्तिविशेष' के रूप में प्रस्तुत किया। सायण ने पौराणिक आख्यानों को वेदमंन्त्रों पर आरोपित कर वेदमन्त्रों का इतिहासपरक अर्थ किया। सायण द्वारा प्रस्तुत वेदमन्त्रों के इतिहासपरक अर्थ अंग्रेज इतिहासकारों के लिए किसी वरदान से कम नहीं था। अंग्रेज चाहते ही थे कि वेदों में इतिहास होने की पुष्टि के लिए उन्हें किसी ऐसे मान्य वेद भाष्यकार का आधार मिले, जिसके आधार पर वे सिद्ध कर सकें कि वेद इतिहासपरक ग्रंथ हैं न कि कोई ईश्वरीय वाणी जिस पर अटूट और अगाध श्रद्धा रखी जा सके। सायण का अन्धानुकरण करने में विदेशी विद्वान् और इतिहासकार जिस तरह से आगे आए उसी तरह से भारतीय इतिहासकार भी। गौरतलब है वेद के सायण भाष्य की नकल करने वाले सायण द्वारा प्रवर्तित और पाश्चात्यों द्वारा समर्थित कल्पित इतिहासवाद की भ्रान्त धारणा को प्रचारित करने में जितना पाश्चात्यों ने पूरी शक्ति लगाई, तो भारतीय इतिहासकार भी पीछे नहीं रहे। और हम जानते हैं कि इतिहास की पुस्तकों में आर्यों के सम्बन्ध में जितनी बातें लिखी मिलती हैं वे सब विदेशी इतिहासकारों की शरारत, षड्यन्त्र और कल्पना का हिस्सा है।

सभ्यताएँ और तात्कालिक समाज

मैकडालन ने वेद में इतिहास सिद्ध करने के लिए वैदिक कोश (Vedic Index) नामक ग्रन्थ लिखा। इस ग्रन्थ को आधार बनाकर विदेशी और भारतीय इतिहाकारों ने भारत के उस इतिहास की रचना की जिसमें आर्यों को विदेशी व आक्रमणकारी, वेदों को गड़ेरियों का गीत और भारत को तान्त्रिकों और जादू–टोना करने वाले देश के रूप में प्रस्तुत किया गया। ध्यान रहे, अथर्ववेद को सायण ने तंत्र और जादू–टोना वाला ग्रंथ माना है। जिसको अंग्रेजों ने अपने इतिहास लेखन का आधार बनाया। वेदों में इतिहास ढूंढने के जिस कार्य को मैक्समूलर ने हाथ में लिया उसे कीथ, गिल्डर, ब्लूमफ़ील्ड, लुडविग, ओल्डनबर्ग, ग्रासमैन, हापकिंस और मैकडालन ने बहुत मजबूती के साथ आगे बढ़ाया। मेकाले यही चाहता था। उसने विदेशी इतिहासकारों और विद्वानों की एक बड़ी

टीम ही इस कार्य के लिए लगा दिया कि भारतीय संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान–विज्ञान, व्यवहार, धर्म, अध्यात्म, कला, साहित्य, दर्शन, चिकित्सा, शिक्षा, स्वास्थ्य और अन्य अनगिनत विद्याओं के भण्डार ग्रंथ कहे जाने वाले वेद में वर्णित विद्याओं और विषयों को किसी भी तरह ईसाई सभ्यता, संस्कृति, शिक्षा, चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि से निम्नतर सिद्ध किया जा सके। जिससे भारत को अपने आधीन बनाए रखने के साथ ही साथ भारतीय समाज को ईसाइयत के रंग में रंगा जा सके। आश्चर्य तो तब होता है जब मेकाले की इस चाल और षड्यन्त्र को समझने के स्थान पर भारतीय राजनेताओं, इतिहासकारों, विद्वानों और विशेषज्ञों ने उसके षड्यंत्र का शिकार बनकर उसके ही कार्य को आगे बढ़ाने में अपना गौरव–सम्मान मानने लगे और इसे ठीक सिद्ध करने में कुतर्कों का सहारा लेने लगे। मानसिक गुलामी की यह परम्परा विदेशी दासता की मुक्ति के बहत्तर वर्षों के बाद भी हम गर्व के साथ कायम किए हुए हैं। आज भारत के लाखों ऐसे लोग मिल जाएंगे जो यह मानते हैं कि वेद में इतिहास, किस्से–कहानियाँ और जादू–टोने का वर्णन है। यदि इनसे पूछा जाए कि आप जो कह रहे है उसका कोई ठोस आधार है तो झट कहेंगे–इतिहास में लिखा है, इतिहास तो इतिहास होता है, उस पर शक करने का कोई कारण नहीं होता है।

वेद में इतिहास मानने और बताने वाले लोगों को कौन समझाए कि वेदमन्त्रों की शब्दावली आज की सामान्य अथवा सीमित अर्थों वाली भाषा न होकर, प्रतीकों, विशेषणों तथा प्रकृति–प्रत्यय के संयोग से निष्पन्न अनेकार्थक यौगिक शब्दोंवाली भाषा है। जिसकों समझने के लिए यास्क कृत निरुक्त, अष्टाध्यायी और अन्य अनेक व्याकरण के ग्रंथों के साथ ही साथ एक सिद्ध योगी या साधक का होना भी आवश्यक होता है। गौरतलब है सायण, उवट, महीधर भारतीय वेद भाष्यकार को इनमें से किसी को न तो ठीक ज्ञान और योगसाधना थी और न तो विदेशी मैक्समूलर, कीथ, मैकडालन आदि विद्वानों को ही। ऐसे में वेदों के यौगिक अर्थ को जनमानस में प्रचारित–प्रसारित करने का अतिआवश्यक कार्य कौन करता। देश का परम सौभाग्य था महर्षि दयानन्द का अवतरण हुआ और वेद ज्ञान के उसके ठीक स्वरूप के साथ जनमानस तक पहुँचाया।

महर्षि दयानन्द ने कहा,–**वेद सब सत्य विद्याओं के आदि स्रोत और गौरव ग्रंथ हैं।** इसके पहले वेद के सम्बन्ध में इतनी दृढ़ता और अधिकार के साथ किसी ने घोषणा नहीं की थी। महर्षि ने विदेशियों के उस षड्यन्त्र और शरारत को बेकार कर दिया जो वेद के सम्बन्ध में लगातार फैलाई जा रही थी। ध्यान रहे दयानन्द के पूर्व वेदों के सम्बन्ध में इतनी तरह की भ्रान्तियाँ, शंकाएं और किस्से समाज में प्रचलित हो चुके थे जिसे सुनकर यह कोई नहीं समझ सकता था कि जिस वेद को ईश्वरीय वाणी कहा और माना जाता है वह तो मामूली पुस्तक से भी गया–बीता हे। महर्षि दयानन्द ने वेद के सम्बन्ध में प्रचलित सभी तरह की भ्रान्तियों, शंकाओं और प्रचलित वेद विरोधी मान्यताओं को समाप्त कर यह सिद्ध करने में कामयाब रहे कि वेद सभी सत्य विद्याओं के आदि स्रोत और गौरव ग्रंथ हैं। वेद को जो गौरव और प्रतिष्ठा पूर्व ऋषियों के समय प्राप्त थी, उस प्रतिष्ठा को दयानन्द ने अपने परम पुरुषार्थ, शुभसंकल्प, सत्साहस और ज्ञान के बल पर दिला दी। आज वेद के सम्बन्ध में विश्व जनमानस के मन में जो प्रतिष्ठा है, उसका अधिकांश श्रेय देव दयानन्द को ही जाता है।

स्वामी दयानन्द के सम्मुख कोई बड़ा सा बड़ा विदेशी या भारतीय विद्‌वान टिक नहीं सका। इस लिए वेद को समझने के लिए दयानन्द के पास जाने के अलावा दूसरा कोई रास्ता दिखाई नहीं देता है। महर्षि ने 'वेदों में इतिहास है' के भारतीय और विदेशी विद्वानों और इतिहासकारों की सभी तरह की भ्रान्तियों, शंकाओं और मान्यताओं को तोड़ने के लिए जिन प्रमाणों, और तर्कों का सहारा लिया, वह सब वेद या वेदांगों से थे। इस लिए लोगों को विवश होकर मानना पड़ा कि दयानन्द वेद के सम्बन्ध में जो बातें कहते हैं, वे ही प्रमाणिक और सत्य की कसौटी पर कसी जा सकती हैं। मेरा एकमेव मत से मानना है कि भारतीय इतिहास या सभ्यताओं के इतिहास को समझने और लिखने के लिए दयानन्द से मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए।

सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कार विधि और अन्य ऋषि दयानन्द कृत ग्रंथों का स्वध्याय दो–चार बार अवश्य कर लेना चाहिए। इससे इतिहास सहित सभी तरह के विषयों की उत्तम जानकारी हो जाती है। इतिहास लेखन एक जटिल विषय है। यदि

विस्तार से इतिहास की जानकारी करनी हो तो पं. भगवद्दत्तजी, आचार्य रामदेव शास्त्रीजी, पं. युधिष्ठिर मीमांसकजी, आचार्य वैद्य नाथ शास्त्रीजी और पं. इन्द्र विद्यावाचस्पतिजी ने भारत वर्ष के अनेक राजाओं का इतिहास अलग–अलग कालों में लिखा। आर्य जगत् के इतिहासकारों और विदेशी–भारतीय इतिहासकारों द्वारा लिखे इतिहास में बहुत अन्तर है। इस लिए पाठ्य–पुस्तकों के इतिहास पढ़ने वालों लोगों को इतिहास पढ़कर कोई धारणा या राय बनाने के पहले आर्य जगत् के इतिहासकारों के द्वारा लिखे इतिहास को अवश्य पढ़ना चाहिए। इससे किसी प्रकार का संशय, भ्रान्ति और द्वन्द्व से बचा जा सकता है। आचार्य रामदेव ने 'भारत वर्ष का इतिहास' नामक पुस्तक लिखकर यह बता दिया कि किस तरह से मनगढ़न्त इतिहास की रचना विदेशी इतिहासकारों द्वारा की गई और उसका अन्धानुकरण भारत में रहने वाले इतिहासकारों ने किया।

श्रृंखला का यह लेख कई शंकाओं, भ्रान्तियों और भ्रमों को तोड़ने का कार्य करेगा। पाठकगण, आप लेख पढ़कर अवश्य समझ जाएंगे कि किस प्रकार अंग्रेजी शासक, अंग्रेज पादरी, अंग्रेज विद्वान् भारत को हर प्रकार से दरिद्र विद्याहीन, ज्ञानहीन, संस्कृतिहीन, धर्महीन, कलाहीन और शक्तिहीन सिद्ध करने के लिए वेद सहित अन्य गौरव ग्रंथों को बदनाम करने के लिए किस–किस तरह के षड्यंन्त्र कर रहे थे। आप को यह लेख कैसा लगा, अपनी प्रतिक्रिया से अवश्य अवगत कराएं। **

अग्ने नय सुपथा रायेऽअस्मान् विश्वानि देव वयुनानि विद्वान्।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो भूयिष्ठान्ते नमऽउक्तिं विधेम ।। (यजुर्वेद ४०.१६)

तू है स्वयं प्रकाशरूप प्रभु! सबका सिरजनहार तुही,
रसना निशदिन रटे तुम्हीं को! मन मे बसता सदा तुही।
अघ अनर्थ से हमें बचाते रहना हरदम दयानिधान!
अपने भक्त जनों को भगवन्! दीजे यही विशद वरदान।

अबकी बार दीवाली में

राष्ट्रहित का गला घोंटकर,
छेद न करना थाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना,
अबकी बार दीवाली में...
देश के धन को देश में रखना,
नहीं बहाना नाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना,
अबकी बार दीवाली में...
कार्तिक की अमावस वाली,
रात न अबकी काली हो...
दीये बनाने वालों की भी,
खुशियों भरी दीवाली हो...
अपने देश का पैसा जाये,
अपने भाई की झोली में...
गया जो दुश्मन देश में पैसा,
लगेगा रायफल गोली में...
देश की सीमा रहे सुरक्षित,
चूक न हो रखवाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना...
अबकी बार दीवाली में...
मिट्टी वाले दीये जलाना..
अबकी बार दीवाली में..

DAYANAND : ONE IN 25 CENTURIES

– Dr. Roop Chandra 'Deepak'
Lucknow (U.P.)
Mob. 9839181690

Maharshi Dayanand Saraswati was a great reformer, rather greatest in last 25 centuries. He stood for Truth. He stood with the Vedas. He stood with the weaker sex. He stood with the weaker sections. And in all these fields, he was unparallel.

Trust in God and belief in Vedas are the two grounds on which Dayanand stands firmly. In the first Principle of 'Arya Samaj' he says that God is the first (agental) cause to all true knowledge and substances known from such knowledge. He knows that God is omnipresent, formless, unchangeable and free from hunger, fatigue, sin, touch, smell etc. So he discards the idol-worship, theory of His re-incarnation and many Gods. He also rejects the Monistic theory of Shankaracharya, although he has much regard for him due to his social endeavour. He just cannot accept the religions that are against Vedas.

He is not emotional in choosing truth out of untruth. Rather he is reasoning and principled when he vows to speak the truth even if his fingers are made to burn like candles. He realises that the unscientific commentaries on Vedas have created confusion and differences among the people. So he takes the heavy work of Veda-Bhashya into his busy hands. He makes it clear on each and every step that only Vedas are self-evident, being the word of God, and that the Rishis and their books are acceptable to the extent that they are in accordance with the Vedas.

He advocates the Vedic System of four Varnas but he is against the prevalent caste system based on birth. At this point his stand has been shared by Dr. B.R. Ambedkar as well. The Vedic System, to which he vows, says that the Brahmins are the men and women of Vedic and spiritual knowledge. Kshatriyas are men of administration and warfare. Vaishyas are the traders.

The rest are known as Shudras, but this name does not show any smallness: it is just an indication of physical labour.

For individual accomplishment and self-actualization, he advocates the four ashramas : Brahmcharya upto education, Grihastha upto family involvement, Vanaprastha upto renunciation and Samnyasa upto the last breath. He was a samnyasin. He had a loin for himself and the rest of his flesh, bones and breaths were for society.

He did more than all persons combined in 25 centuries for the upliftment of

women and the down troden. He quotes the Shrauta Sutra 'Imam Mantram patni pathet' to prove that women have an equal right to study Vedas as men have. He also quotes a mantra from Yajurveda, 'Yathemam Vacham' to prove that Vedas are for all persons, men or women, high or low. rich or poor, all alike. He asks whether God is partial to allow the Brahmins to study Vedas but to prohibit the lower classes? He criticizes the rule-makers that forbidding women from education is out of their greed and foolishness.

Dayanand was an inspiration for Hindi and Sanskrit languages. He has prescribed only ancient Sanskrit books in the syllabus for students and authored his books in Hindi.

He has reminded his countrymen that India was once a Golden Bird, and inspired them to develop the small scale industries even with the help of foreigners. He has also calculated how cow is valuable in the country's economic progress.

In any of the ancient India's Sanskrit books, there is no indication that Aryans have immigrated from somewhere. So. Dayananda declared that Aryans' original home is India, and they have not come from outside India. He stands for a Chakravarti raj of Aryans. He has mentioned such a desire repeatedly in his commentaries on Vedas. While asked, he replied that the British raj in India was a Su-Raj (good government) but Swaraj (self government) is always better than Su-Raj. He was the first person to use the word 'Swaraj' in modern India.

Dayanand was a great philosopher. He has condemned the no-God, many-Gods and only-God theories of Philosophy. He has presented on the basis of Vedas the Doctrine of three Eternals- God, Souls and the Matter. He has also reproduced on the basis of Upanishads that there is a reversion of souls from emancipation to life again.

The rishi founded the Arya Samaj in Mumbai (then Bombay) on Chaitra Shukla 5, Vikram-year 1932 i.e. Saturday 10th April, 1875 A.D. It has since opened its new branches all over India and the world. More than a crore of people lead their life in accordance with Arya Samaj. He has also set up the Paropkarini Sabha at Ajmer and it works as the successor to him.

Let us remember him for his services to the land and guidance to us on all matters of life and after. He was the greatest man on earth after Krishna. ***************

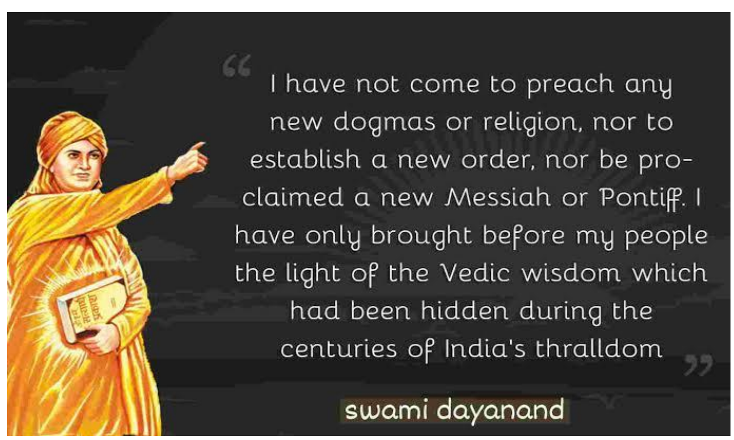

देवपीयु और देवबंधु कौन ?

— पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय

**देवपीयुश्चरति मर्त्येषु गरगीर्णो भवत्यस्थि भूयान्।
यो ब्राह्मणं देवबन्धुं हिनस्ति न स पितृयाणमप्येति लोकम्।।**

(अथर्व वेद काण्ड ५ सूक्त १८ मंत्र १३)

अन्वय :— (यः) मर्त्येषु देवपीयुः (सन्) चरति (सः) गरगीर्णः अस्थिभूयान् भवति। यः देवबन्धु ब्राह्मणं हिनस्ति सः पितृयाणं लोक न अपि—एति।

अर्थ : — जो मनुष्य (मर्त्येषु) मनुष्यों के मध्य (देव पीयुः) विद्वानों को सताने वाला है वह (गरगीर्णः) विष को निगलने वाले के समान (अस्थि भूयान्) केवल हाड मांस का पिंजर रह जाता है, (यः) जो (देवबन्धु ब्राह्मणं) ईश्वर के प्यारे भक्त विद्वान् को (हिनस्ति) हानि पहुंचाता है (स) वह (लोकं पितृयाणं) संसार में पितृयाण को (न अप्येति) प्राप्त नहीं होता। अर्थात् पितरों (बुजर्गों) की बनाई हुई परम्पराओं को सुरक्षित नहीं रखता।

व्याख्या :— इस मंत्र में दो कोटि के मनुष्यों का उल्लेख है एक **'देवपीयु'** और दूसरे **'देवबंधु'**। वस्तुतः मनुष्य जाति के दो वर्ग इन्हीं दो परस्पर विरोधी प्रवृत्तियों तथा उनके अवान्तर भेदों के आधार पर हैं। देव का अर्थ है ईश्वर अथवा कोई अच्छी चीज जो ईश्वर के गुणों से मिलती—जुलती हो। 'प्रकाश' को हम 'देव' कह सकते हैं। दया, न्याय, धीरता, वीरता, प्रेम, सत्यता यह सब ईश्वर के गुण हैं। इसलिए दिव्य हैं। जहां—जहां यह गुण या इनका कुछ भी अंश पाया जाएगा उन चीजों को हम उन गुणों के अनुपात से 'देव' कह सकते हैं। देवपीयु का अर्थ है दिव्य गुणों से घृणा करने वाला और उनसे अलग रहने वाला। इसके विपरीत 'देवबंधु' वह है जो दिव्य गुणों से प्रेम करता है। 'देवबंधुत्व' को आप दैवी प्रवृत्तियां कह सकते हैं और 'देवपीयुत्व' को आसुरी। जो 'सुर' नहीं वही 'असुर' है। उजाले का न होना ही अंधेरा है। सुरों और असुरों की प्रवृत्तियां भिन्न होती हैं। सुरों को जो प्रिय है असुरों को वह अप्रिय है। जो असुरों को प्रिय है वह सुरों को अप्रिय है। कुछ ऐसे भी प्राणी हैं जिनको प्रकाश अप्रिय है। वह सूर्य की रोशनी से भागते हैं। यदि उल्लू या चमगादड़ का बस चले तो वह सूर्य के उदय होने पर ऐसी पाबंदी लगा दें कि वह कभी चमकने ही न पावे। यदि 'उल्लू' को किसी उपास्य देव का इष्ट हो तो उल्लू का ईश्वर सूर्य, आदित्य, प्रकाश स्वरूप आदि नाम वाला न होगा। यदि उल्लू उपासना करता होगा तो शायद ऐसा ना कहता होगा 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अपितु ''ज्योतिषो मातमो गमय'' कहता होगा। मनुष्यों में भी बहुत से हैं जो 'देवबंधु' नहीं अपितु 'देवपीयु' हैं। उनको दिव्य गुणों से घृणा है। चोर को चांदनी रात प्यारी नहीं होती। चोर की दृष्टि में सबसे बुरा मनुष्य वह था जिसने दीपक का आविष्कार किया और जिसने गैस या बिजली के लैंम्पों का आविष्कार किया और अंधेरी अमावस्या को पूर्णिमा के रूप में परिवर्तित कर दिया उसकी अधमता तो वर्णन में नहीं आ सकती। परन्तु वेद मंत्र कहता है कि 'देवपीयुत्व' मनुष्य की निर्बलता है सबलता नहीं। अवगुण है और त्यागने योग्य है। गुण नहीं। अपितु 'गर' अर्थात् विष है। विष कभी—कभी मीठा होता है। परन्तु 'गरगीर्णः' अर्थात् विष को निगलजाने वाला प्राणी शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है अथवा जब तक जीवित रहता है पीड़ित रहता है। विष निगलने वाला विष को तो प्यार करता है परन्तु विष से उत्पन्न हुई बुराइयां उसे भी दुख देती हैं। मनुष्य विषयों को पसंद करता है विष को नहीं। बुद्धिमान और निर्बुद्धि मनुष्य में यही भेद है कि उसे विषयों के भीतर विष दृष्टिगोचर नहीं होता। जिसने विषयों के अन्तर्निहित विष को जान लिया वह विषयों से दूर भागता है। उल्लू सूर्य के प्रकाश से भागता है। परन्तु वह यह नहीं जानता कि दूसरे की भी आंखें हैं। उसे भी रात में चलने फिरने और भोजन के खोजने में कुछ न कुछ प्रकाश की आवश्यकता होती है। यदि सर्वथा प्रकाश का अभाव हो जाए तो उसकी भी आंखें

खुल जाएं। चोर को दिन प्यारा नहीं रात प्यारी है। परन्तु यदि दिन हो ही नहीं तो धन कहां से आए और चोर क्या चुराए। दूसरी बात यह है कि चोर जो रात में चुराता उसको दिन के प्रकाश में भोगता है। चोरी चोर को अच्छी लगती है परन्तु उसी समय तक जब तक कि चोरी की मात्रा बहुत कम रहती है। यदि चोरों की संख्या बढ़ जाए तो चोर भी तंग आ जाएं।

इसलिए वेद मंत्र ने पहली बात यह कही कि 'देवपीयु' होना विष निगलने के समान है। गरगीर्ण। इसका परिणाम क्या होगा? वेद उत्तर देता है ''देवपीयुश्चरति! भवति अस्थिभूयान्''। हड्डी–हड्डी शेष रह जाती है। शरीर का वह रस जिसके सहारे जीवन चलता था नष्ट हो जाता है। मृत्यु के पश्चात् शरीर तो रहता ही है लाश के रूप में न कि शरीर के रूप में। 'देवपीयु' मनुष्य मरे हुए के समान है, यदि जिंदा भी है तो 'जिंदा लाश'। उसका जीवन समाप्त हो चुका।

'देवबंधु' को ब्राह्मण कहा है। ब्राह्मण कौन है ? वेदपाठी – भवेद् विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः। जो केवल वेद को पढ़ता है वह तो केवल विप्र है। जो ब्रह्म को जानता है, वही ब्राह्मण है। वही देवबंधु है। ब्रह्म अर्थात् परमात्मा के प्रचारित और शासित नियम समस्त जगत् में ही ओतप्रोत हैं। उनका उल्लंघन असम्भव है। आप उनके उल्लंघन की इच्छा कर तो सकते हैं परन्तु उसमें सफल नहीं हो सकते। क्योंकि सृष्टि के नियमों की एक श्रृंखला है। जैसे जंजीर की कड़ियां एक दूसरे में बंधी रहती हैं उसी प्रकार सृष्टि के नियम हैं। एक दूसरे से सम्बद्ध है। जो इस सम्बन्ध को समझता है वही देवबंधु है। वही ब्राह्मण है। उसको वेदों में कई स्थानों पर ऋतज्ञ (सृष्टि के नियमों को जानने वाला), ऋतवृद्धः (उन नियमों को बढ़ाने वाला), ऋतपाः (उनका पालन करने वाला) कहा है। उसीको एक स्थल पर ''ऋतेजाः'' कह कर पुकारा है अर्थात् ब्राह्मण को बनाया ही ऋत की रक्षा के लिए है। अर्थात् वह स्वयं सृष्टि के नियमों का बंधु बनकर उनका पालन करे और दूसरों को उस नियम पालन में प्रोत्साहन, प्रेरणा तथा सहायता देता रहे। 'देवबंधु' ब्राह्मण अपने जीवन से जो परम्परायें स्थापित करते हैं उन्हीं का नाम पितृयान है। वह 'ऋतपा' अर्थात् सृष्टि के नियमों की रक्षा करने वाले हैं। इससे विपरीत अवस्था 'देवपीयु' असुरों की है, वह सर्वदा ऐसा काम करते हैं कि सृष्टि के नियम भंग होते रहें ।

देवबंधु ब्राह्मण कहता है कि सृष्टि के निश्चित नियम हैं, ईश्वर उनका नियंता है। नियमों को पालो और नियंता की उपासना करो। 'देवपीयु' नास्तिक कहता है कि सृष्टि में कोई निश्चित नियम नहीं। ''कभी कुछ है कभी कुछ है।'' कोई ईश्वर नहीं। खाओ, पियो, मौज करो।

देवबंधु ब्राह्मण कहता है सदा सत्य बोला करो। कभी झूठ न बोलो। 'देवपीयु' नास्तिक कहता है कि बिना झूठ के काम नहीं चलता। अतः झूठ बोलो और झूठ को इस चालाकी से बोलो कि किसी को पता ना चले कि तुम झूठे हो।

देवबंधु ब्राह्मण कहता है कि अहिंसा धर्म का आदि स्रोत है। कभी किसी को पीड़ा नहीं देनी चाहिए। देवपीयु नास्तिक कहता है कि दया और अहिंसा निर्बलता की निशानी है। घोड़ा घास से प्यार करे तो खाए क्या ? बड़ी मछलियां छोटी मछलियों को खा जाती है। तुम भी निर्बलों से माल छीन कर खा जाओ। जिनमें बल नहीं उनको वस्तुओं के भोगने का भी अधिकार नहीं। वीर भोग्या वसुंधरा। भूमि है ही उसी की जो दूसरों को परास्त करता है।

देवबंधु ब्राह्मण कहता है ब्रह्मचर्य का पालन करो । दूसरों की स्त्री को कुदृष्टि से न देखो । देवपीयु राक्षस कहता है – **परस्त्री कुचचुम्भेषु कुम्भेषु परदन्तिनाम्। निपतन्ति न भीरूणाम् दृष्टयः शरवृष्टय** अर्थात् जो पराई स्त्री के कुचकुम्भों पर दृष्टि नहीं डालता और पराए हाथियों के मस्तक पर तीरों की वर्षा नहीं करता वह भीरु है।

इस प्रकार ब्राह्मण देवबंधु पितृ–यान को बनाता और उसकी रक्षा करता है, और देवपीयु उस परम्परा को तोड़ देता या बिगाड़ देता है। आपने प्रायः सुना होगा कि रात के समय डाकू लोग राजमार्गों के बीच में पत्थर डालते या रस्सी बांध देते हैं जिस से यात्रा करने वाली गाड़ियों, मोटरों आदि की स्वच्छंद गति का प्रतिरोध हो जाए और उन को लूटने में सहायता मिले। इसी प्रकार 'देवपीयु' रूपी लुटेरे 'पितृयान' में रोक डालने के लिए प्राचीन परम्पराओं को तोड़ देते हैं, जिससे उनकी स्वार्थ सिद्धि हो सके। हम देखते हैं कि बहुत सी प्राचीन परम्पराएं जो मानव जाति के लिए

कल्याणप्रद थीं स्वार्थियों ने तोड़ दी। जन्म–परक जाति–भेद परम्परा कैसे चली? आरम्भ में केवल गुण और कर्म ही ब्राह्मणत्व के निर्णायक थे जन्म नहीं। कालांतर में कभी कोई ब्राह्मण रहा होगा जो अपने अयोग्य पुत्र के लिए भी वही अधिकार चाहता होगा जो उसको प्राप्त थे। इसलिए उसने परम्परा तोड़ दी होगी और उसकी प्रबल आवाज का जनता की ओर से विरोध न हो सका होगा। आज भी बहुत से कलेक्टर या जज चाहते हैं कि उनके अयोग्य पुत्र भी कलेक्टर या जज बन जाएं। पुराने जमाने में प्रायः वजीर का लड़का ही वजीर बनता था। यह परम्परा के टूटने के दृष्टांत हैं। परन्तु यदि आपने स्वार्थवश अच्छी परम्परा तोड़ दी तो वह अन्ततोगत्वा आपको भी हानि पहुंचावेगी। 'देवपीयु' पितृयान को नष्ट कर देता है परन्तु पितृयान की आवश्यकता को दूर नहीं कर सकता, अतः जब उसे पितृयान की आवश्यकता पड़ती है तो उसे निराशा होती है। यदि आप दूसरे के लिए गड्ढा को खोदेंगे तो स्वयं भी उसमें गिरेंगे। डाकू या चोर सड़क को बिगाड़ सकता है बना नहीं सकता। चोर और डाकुओं की सरकार नहीं बन सकती देवपीयु लोग किसी संस्कृति को सुरक्षित नहीं रख सकते । इसलिए वेद कहता है कि देवबंधु ब्राह्मण की जो हिंसा करता है वह पितृयान की प्राप्ति नहीं कर सकता।

यहां यह याद रखना चाहिए कि यह मंत्र वर्तमान ब्राह्मण जाति के दूसरे ब्राह्मणेतर लोगों पर निराधार जन्मपरक श्रेष्ठता दिखाने के लिए नहीं है। प्रायः लोगों की यह धारणा है कि ब्राह्मण लोगों ने अपना बड़प्पन बनाए रखने के लिए शास्त्रों में से ऐसे वचन दे रखें हैं कि ब्राह्मण चाहे कैसे भी दुष्ट क्यों न हो वह ब्राह्मण वंश में उत्पन्न होने के कारण पूजनीय है। ब्राह्मण की कभी हत्या नहीं करनी चाहिए। लोगों की यह धारणा बिल्कुल गलत नहीं है। बहुत से वचन इसलिए कहे गए हैं और भारतवर्ष में बहुत सी प्रथाएं भी इन्हीं स्वार्थी लोगों की डाली हुई हैं, परन्तु इस वेद मंत्र में ब्राह्मण का अर्थ योगिक है रूढ़ि नहीं। स्टेशनों पर पानी पिलाने वाला पानी पांडे या रोटी पकाने वाला महाराज ब्राह्मण नहीं है। वह न ब्राह्मण है न देवबंधु है। सम्भव है 'देवपीयु' हो और पितृयान की महिमा को न समझता हुआ उसको तोड़ रहा हो।

धम्मपद के छब्बीसवें वर्ग में बुद्ध भगवान ने 'ब्राह्मण' कौन है इस विषय पर अच्छा प्रकाश डाला है। उस अध्याय का नाम ही ब्राह्मण वर्ग है। उसके ४१ श्लोकों में सच्चे ब्राह्मण के लक्षण दिए हैं :–

यस्य कायेन वाचाय मनसा नत्थि दुक्कतं ।
संबुतं तीहि ठानेहि तमहं ब्रू मि ब्राह्मणं ।।६।।

जो शरीरवाणी और मन से बुरा काम नहीं करता जो हम तीनों बातों से सुरक्षित है उसको मैं ब्राह्मण कहता हूँ।

न जटाहि न गोत्तेन न जच्चाहोति ब्राह्मणे।
यम्हि सच्चं च धम्मोच सासुखी सोच ब्राह्मणे ।।११।।

कोई जटा, गोत्र या जाति से ब्राह्मण नहीं होता। जिसमें सत्य और धर्म है वही सुखी और ब्राह्मण है।

गम्भीर पञ्च मेधाविं मग्गायग्गस्य कोविदं ।
उत्तमत्थं अनुप्तं तमहं ब्रू मि ब्राह्मणं ।।२१।।

मैं उसको ब्राह्मण कहता हूं जिसका ज्ञान गहरा है। जो मेधावी है, जो उचित और अनुचित मार्ग को जानता है और जिसने अपने उद्देश्य की प्राप्ति कर ली है। वेद मंत्र में भी ब्राह्मण का यही तात्पर्य है तभी तो उसको देवबंधु कहा है। जो देवबंधु नहीं वह ब्राह्मण नहीं। सच्चे ब्राह्मणों को हानि पहुंचाना पितृयान को हानि पहुंचाना है क्योंकि पितृयानों की रक्षा तो सच्चे ब्राह्मणों के ही हाथ में है। जहां सच्चे ब्राह्मण नहीं रहते या उनका कोई मान नहीं करता वहां व्यक्ति हानि तो होती ही है सबसे बड़ी हानि पितृयानों अर्थात् कल्याणप्रद परम्पराओं को होती है। आप काठगोदाम से नैनीताल को जाइये। एक अच्छी पक्की सड़क बनी है। उस पर मोटर चलती हैं। परन्तु प्रतिदिन आप देखेंगे कि सड़क पर से मजदूर पत्थर उठा उठा कर फेंक रहे हैं। नगर की सड़कों पर ऐसा नहीं होता। कारण यह है कि निरंतर पत्थरों के टुकड़े पहाड़ों पर से आकर सड़क को रोकते रहते हैं। यदि दो दिन मजदूरों को हटा लिया जाए तो सड़क रुक जाए और यात्रा बंद हो जाए, क्योंकि 'देवपीयु' पत्थरों ने पितृयान को रोक लिया। इसी प्रकार नित्य 'देवपीयु' नास्तिक और स्वार्थी लोग वैदिक परम्पराओं की सड़क को रोकने का यत्न किया करते हैं। उन परम्पराओं की रक्षा के लिए देवबंधु ब्राह्मणों की आवश्यकता है जिससे पितृयान विकृत न हो सके।

ऋषि दयानंद ने आर्य समाज की स्थापना इसलिए

की थी कि सच्चे देवबंधु ब्राह्मण वैदिक परम्परा रूपी पितृयान को सुरक्षित रखें और टूटे मार्ग की फिर से मरम्मत करके उसको इस योग्य बना दें कि यात्रियों को अपनी जीवन यात्रा करने में सहायता मिल सके।

सत्यार्थ प्रकाश : क्या और क्यों

महर्षि दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में अपना कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश रचकर धार्मिक जगत् में एक क्रान्ति कर दी। यह ग्रन्थ वैचारिक क्रान्ति का एक शंखनाद है। इस ग्रन्थ का जन साधारण पर और विचारशील दोनों प्रकार के लोगों पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा। हिन्दी भाषा में प्रकाशित होने वाले किसी दूसरे ग्रन्थ का एक शताब्दी से भी कम समय में इतना प्रसार नहीं हुआ जितना की इस ग्रन्थ का अर्धशताब्दी में प्रचार प्रसार हुआ। हिन्दी में छपा कोई अन्य ग्रन्थ एक शताब्दी के भीतर देश व विदेश की इतनी भाषाओं में अनुदित नहीं हुआ जितनी भाषाओं में इसका अनुवाद हो गया है। हिन्दी में तो कवियों ने इसका पद्यानुवाद भी कर दिया।

सबसे पहला ग्रन्थ विश्व में इस युग में चमत्कारों को चुनौती देने वाला सबसे पहला ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है, जिस मनीषी ने चमत्कारों को तर्क तुला पर तोल कर मतों पंथों को अपने व परायों को झकझोरा, विश्व का वह पहला विचारक **महर्षि दयानन्द सरस्वती है**, सत्यार्थ प्रकाश के प्रणेता तत्त्ववेत्ता ऋषि दयानन्द को न तो पुराणों के चमत्कार मान्य है और न ही बाईबल व कुरान के, हनुमान ने सूर्य को मुख में ले लिया, यह भी सत्य नही है और हजरत ईसा ने रोगियों को चंगा कर दिया, मृतकों को जीवित कर कर दिया तथा हजरत मुहम्मद साहब ने चाँद के दो टुकड़े कर दिये – ये भी ऐतिहासिक तथ्य नही है। हजरत मूसा हो अथवा इब्राहिम सृष्टि नियम तोड़ने में कोई भी सक्षम नही हो सकता, आर्य विद्वानों ने इस विषय पर सैकड़ों शास्त्रार्थ किये।

सार्वभौमिक नित्य सत्य : इस ग्रन्थ का लेखक ईश्वर जीव प्रकृति इन तीन पदार्थों को अनादि मानता है। ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव भी अनादि व नित्य हैं। सृष्टि नियमों को भी ग्रन्थ करता अनादि व नित्य तथा सार्वभौमिक मानता है। विज्ञान का भी यही मत है कि सृष्टि नियम अटल, अटूट सार्वभौमिक हैं। इन नियमों का नियंता परमात्मा है। परमात्मा की सृष्टि नियम न तो बदलते हैं न टूटते हैं न घटते हैं न बढते हैं और न ही घिसते हैं इसलिए चमत्कार की बातें करना एक अन्धविश्वास है। किसी भी मत का व्यक्ति चमत्कार में आस्था रखता है तो यह अन्धविश्वास है। विश्व में इस युग में चमत्कारों को चुनौती देने वाला सबसे पहला ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश है। जिस मनीषी ने चमत्कारों को तर्क तुला पर तोलकर मत पंथों को अपनों व परायों को झकझोरा विश्व का वह पहला विचारक महर्षि दयानन्द बना।

एकादश समुल्लास की अनुभूमिका ने भारतीयों की हीन भावना को भगाया। यह इसी अनुभूमिका का प्रभाव था।

सत्यार्थ प्रकाश ने देशवासियों को स्वराज्य का मंत्र दिया, इनके अतिरिक्त सत्यार्थ प्रकाश में वर्णित कुछ वाक्यों व विचारों की मौलिकता व महत्व को विचारकों ने जाना व माना परन्तु उनका व्यापक प्रचार नहीं किया गया, इन्हें हम संक्षेप में यहाँ देते हैं : ऋषि दयानन्द आधुनिक विश्व के प्रथम विचारक है जिन्होंने इस ग्रन्थ में सबके लिए अनिवार्य व निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा का सिद्धांत रखा, उनके एक प्रमुख शिष्य स्वामी श्रद्धनन्द जी ने भारत में सबसे पहले निःशुल्क शिक्षा प्रणाली का प्रयोग किया। ऋषि ने अपने इस ग्रन्थ में लिखा है, कृषक व श्रमिक आदि राजाओं के राजा हैं, कृषकों व श्रमिकों का समाज में सम्मान का स्थान है। इस युग में ऐसी घोषणा करने वाले पहले धर्म गुरु ऋषि दयानन्द ही थे। ऋषि ने अपने इस ग्रन्थ के १३ वे समुल्लास में लिखा है कि यदि कोई गोरा किसी काले को मार देता है तो भी पक्षपात करते हुए न्यायालय उसे दोषमुक्त करके छोड़ देता है। इसाई मत की समीक्षा करते हुए ऐसा लिखा गया है, यह महर्षि की निर्भीकता व सत्य वादिता एवं प्रखर देशभक्ति का एक प्रमाण है। बीसवीं शताब्दी में आरंभिक वर्षों में मद्रास, कोलकाता व रावलपिंडी आदि नगरों में ऐसे घटनाएं घटती रहती थीं, मरने वालों के लिए कोई बोलता ही नहीं था। प्रथम विश्व युद्ध तक गांधी जी भी अंग्रेज जाति की न्याय प्रियता में अडिग आस्था रखते हुए अंग्रेजी न्याय पालिका का गुणगान करते थे। महर्षि दयानन्द प्रथम भारतीय महापुरुष है जिन्होंने विदेशी शासकों की न्याय पालिका का खुलकर अपमान किया। ऋषि ने विदेशियों की लूट खसोट व देश की कंगाली पर तो इस ग्रन्थ में कई बार खून के आंसू बहाये हैं। तेरहवें समुल्लास में ही इसाई मत की समीक्षा करते हुए लिखा है कि तभी तो ये इसाई लोग दूसरों के धन पर ऐसे टूटते हैं जैसे प्यासा जल पर व भूखा अन्न पर, ऐसी निर्भीकता का हमारे देश के आधुनिक इतिहास में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता।

इसलिए अगर अज्ञानता की बेड़ियों को काटना है तो अपने घर में सत्यार्थ प्रकाश जरूर रखें।

रिफॉर्मर (सुधारक)

– स्वामी दर्शनानन्द जी

प्यारे मित्रो! हमारे प्राचीन ऋषि–मुनि जिसे आचार्य कहते थे, पाश्चात्य देशों में जिसे पैगम्बर कहते थे और यूरोपीय लोग जिसे रिफॉर्मर कहते हैं, ये वे लोग हैं जो अपने स्वार्थ सर्वसाधारण के हित पर न्यौछावर करके अपने तन और धन को दूसरे के तन और धन की रक्षा में लगाते हुए अपनी जीवन–यात्रा को निष्ठापूर्वक शुद्ध भावों से पूर्ण करते हैं, जिसकी प्रशंसा में महात्मा भर्तृहरि ने कहा है –

एके सत्पुरुषाः परार्थघटकाः स्वार्थं परित्यज्य ये।।

अर्थात् मनुष्यजाति में एक सच्चे पुरुष हैं जो दूसरे की भलाई तन, मन और धन से बिना स्वार्थ के करते हैं। वे अपने स्वार्थ का तनिक भी ध्यान नहीं करते। उनका आत्मा अपनी प्रबल शक्ति से बड़े–बड़े विघ्नों को हटाता हुआ अपने उद्देश्य को प्राप्त हो जाता है। जैसाकि महात्मा भर्तृहरिजी ने कहा है –

प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति।।

– नी०श०

अर्थ – नीच पुरुष तो विघ्नों के भय से किसी काम को आरम्भ ही नहीं करते। मध्यम श्रेणी के मनुष्य काम को आरम्भ कर देते हैं, परन्तु जिस समय कोई विघ्न आकर पड़ता है तो तुरन्त उस कार्य को छोड़ अलग हो जाते हैं। उत्तम पुरुष अर्थात् रिफॉर्मर वे हैं कि जो विघ्नों के आने पर भी अपने आरम्भ किये हुए उत्तम कार्य को नहीं छोड़ते।

प्रिय पाठकगण! ये रिफॉर्मर भी दो प्रकार के होते हैं–एक वे जो संसार के प्रवाह के साथ बहकर संसार को कुमार्ग से हटाना चाहते हैं, और दूसरे वे हैं जो संसार के प्रवाह को अपनी प्रबल शक्ति और आत्मिक बल से वहीं रोकने पर प्रस्तुत होते हैं। प्रथम श्रेणी के मनुष्यों में संसारी पुरुष तनिक भी विरोध नहीं करते और उनको कष्टों का सामना भी नहीं करना होता, परन्तु द्वितीय श्रेणी के रिफॉर्मरों का विरोध संसार अपनी आर्थिक, वैज्ञानिक, राज्यकीय एवं शारीरिक शक्ति अर्थात् हर प्रकार की शक्ति से करता है और जहाँ तक बन पड़ता है संसारी मनुष्य इस श्रेणी के महात्माओं को कष्ट देने के लिए कटिबद्ध हो जाते हैं। कोई अपनी वाणी से उनको नास्तिक, गुमराह और धिक्कार–योग्य कहता है, कोई अपने धन से उनको हानि पहुँचाने के उपाय करते हैं। कोई अपनी विद्या को इस असत्य मार्ग को सत्य कर दिखाने में लगाता है और दिन रात इस प्रकार की युक्तियाँ सोचता है जिससे कि उस महात्मा के सच्चे उद्योग से संसार पूर्ण लाभ न उठा सके। कोई अपने बल के घमण्ड में सोटा, तलवार और बन्दूक लेकर सामने को दौड़ता है और कोई अपनी राज्यकीय शक्ति से कानून के बन्धन में कुचलना चाहता है।

प्रिय पाठकगण! इसी प्रकार समस्त संसार उस अकेले के विरोध पर अपने सम्पूर्ण प्रयत्न को व्यय कर देता है, परन्तु क्या बात है कि सारे संसार के विरोध से भी उस महात्मा के हृदय में तनिक भी भय उत्पन्न हो? संसार के बुरे बर्ताव से उस सच्चे हितैषी के हृदय पर तनिक भी शोक का अधिकार हो। नहीं–नहीं, जितनी प्रबलता से विरोध दिखाई पड़ता है उतना ही वह अपनी शक्ति के (सुदृढ़) प्रभाव को देखकर अपनी सफलता पर प्रसन्न होता है। वह देखता है कि यावत् मनुष्य सूर्य के प्रकाश को इतना (बहुत ही) गर्म नहीं पाते, तावत् उसके प्रभाव से बचने का विचार भी नहीं करते। जिस समय धूप की गर्मी से उनकी दशा बिगड़ने लगती है तभी उनकी रोक के उपाय सोचना आरम्भ करते हैं – कहीं खस की टट्टी लगाते हैं, कहीं घर बनाते हैं।

यही दशा वर्तमान संसार की हो रही है कि वे अब मेरे सत्य उपदेश के तेज को जान गये हैं। वह जानता है कि यद्यपि ये मेरे विरोध पर तुले हुए हैं, परन्तु मेरी सत्यता का लोहा मान गये हैं। ऐसे भावों से उसका उत्साह बढ़ता जाता है और अपने सुधार–कार्य को वह और भी जोर के साथ आरम्भ करता है। संसार उसको हानि पहुँचाना चाहता है और वह उनको लाभ पहुँचाने

का प्रयत्न करता है। सारांश यह कि इसी प्रकार की खिंचा–खिंची थोड़े समय तक खूब रहती है। यदि सामना करनेवाला राजा है तो संसार उसके धैर्य के सामने हार मानकर बैठ जाता है और उसके भय के मारे उसका आज्ञाकारी हो जाता है और यदि डाकू अथवा दास है तो वह आन्तरिक धैर्य न होने के कारण स्वयं संसार का दासत्व स्वीकार कर लेता है।

प्रिय पाठकगण! यदि आप संसार के इतिहास को उठाकर देखें तो पहली श्रेणी के रिफॉर्मरों (सुधारक) का आप नाम भी न पावेंगे, परन्तु द्वितीय श्रेणी के रिफॉर्मर आपको चमकते हुए सूर्य की भाँति इतिहासरूपी क्षितिज पर दिखाई देंगे। यदि आप जनसाधारण से बातें करें तो इन प्रबल महात्माओं के सेवक आपको असंख्य ही मिल जाएँगे। तनिक ध्यान तो दीजिए, जिस समय महात्मा बुद्ध ने संसार के सुधार के लिए कमर कसी थी उस समय संसार में वाममार्ग का जोर था। भारतवर्ष में वाममार्गी लोग यज्ञों के नाम से पशु–हिंसा करते थे और अन्य देशों में भी जला डालने की कुर्बानी प्रचलित थी। महात्मा बुद्ध ने इन सबके विरोध पर अपनी कटि (कमर) कसी और चाहा कि अपनी प्रबल शक्ति से इस पाप–नद का प्रवाह रोक देवे, परन्तु महात्मा राजा थे, इसलिए संसार का बड़ा भारी बन्धन उसके गले में पड़ा हुआ था। जिस समय वह संसार को गिराना चाहता था, संसार उस कड़ी को पकड़कर झटका दे देता था और महात्मा बुद्ध सफलता को प्राप्त नहीं होते थे।

अन्त में उन्होंने सोचा कि यावत् मैं इस बन्धन को तोड़कर गले से न निकाल दूंगा, मैं कभी इसका सामना नहीं कर सकूँगा। उन्होंने झट से राज्य को छोड़ दिया। संसार के विरोध पर कटि (कमर) कसी और अन्त में वे फलीभूत हुए। २४ सौ वर्ष से महात्मा बुद्धदेव अपने राज्य में विद्यमान नहीं हैं, परन्तु फिर भी एक–तिहाई संसार उनका दास है। यदि महात्मा बुद्धदेव राज्य के बन्धन को गले में रखते हुए यावत् जीवन प्रयत्न करते, तो भी इतना प्रभुत्व न प्राप्त होता और इस प्रकार का तो कदापि न होता कि उनके पीछे भी बना रहता, परन्तु बौद्ध धर्म का उनके २५ सौ वर्ष पीछे भी संसार में दिखाई देना और संसार के सम्पूर्ण वर्तमान राजाओं से अधिक प्रजा का होना केवल राज्य के बन्धन को तोड़ फेंकने का ही फल है।

प्रिय पाठकगण! जिस समय महात्मा बुद्ध के उत्तराधिकारियों ने सत्य से गिरकर नास्तिकपन फैला दिया और स्वामी शङ्कराचार्य के हृदय में इस रोग के कीटों के निवारण करने का विचार उत्पन्न हुआ तो उन्होंने सम्पूर्ण संसार के विरोध पर कमर बाँधी। शङ्कर के समय में समस्त राजा बौद्ध थे। सेठ–साहूकार बौद्ध थे। सारांश यह कि समस्त संसार महात्मा शङ्कराचार्य के प्रतिकूल था, परन्तु यह अपनी इन्द्रियों का राजा संसार को तुच्छ जानकर और उनके प्रभुत्व का तनिक भी विचार न करके बौद्ध धर्म के दबाने के लिए कटिबद्ध हो गया। बड़े–बड़े शास्त्रार्थ हुए। लोगों ने उनके विरोध पर कमर कसी, परन्तु अन्त में वे महात्मा सफलता ही को प्राप्त हुए। समस्त भारत से बौद्ध धर्म को निकाल दिया। यदि शङ्कराचार्य ३२ वर्ष के वय में न मर जाते तो कदाचित् समस्त संसार में बौद्ध धर्म का नाम न रहता और न ही और कोई मत जो बौद्ध मत से उत्पन्न हुए थे, वरन् समस्त संसार में एक वैदिक धर्म ही प्रकाश करता और सम्पूर्ण संसार इस सच्चे सूर्य के प्रकाश से अविद्या और प्रमाद के अन्धकार से बचकर अपने लक्ष्य पर पहुँचने का प्रबन्ध करते और ये बुराइयाँ अर्थात् मुकद्दमेबाजी, झूठ बोलना, छल, कपट जो आज संसार में दिखाई पड़ते हैं तनिक भी न दीखते।

प्रिय पाठकगण! जिस समय महात्मा मसीह ने यहूदियों की रीतियों को मनुष्य–जाति के लिए हानिकारक जानकर उनके निवारण करने का प्रयत्न किया, तब भी सारे रूम के मनुष्य उसके विरुद्ध हो गये। महात्मा मसीह ने, जिसने बौद्ध धर्मानुयायियों से शिक्षा प्राप्त की थी, जिसने बुद्ध के इतिहास और वृत्तान्त को भी सुन रखा था, उनके विरोध पर कुछ ध्यान न दिया और काम को धूमधाम से चलाते गये। थोड़े ही वर्षों के उपदेश से सहस्रों मनुष्य उसके विचार के हो गये। उस समय यहूदी बादशाह थे। यहूदी ही धनवान् थे और यहूदी ही मल्ल थे, परन्तु मसीह रिफॉर्मर था। वे संसार के दास थे और यह संसार का विरोधी। यद्यपि मसीह इसी झंझट में अपने एक शिष्य की बेईमानी एवं विश्वासघात से मारा गया, परन्तु उसकी मृत्यु ने भी यहूदियों के सिद्धान्त और रीति–नीति को नष्ट कर दिया। आज आधा संसार इसके अनुयायियों के अधिकार में है। यदि मसीह यावत्

जीवन संसार के बन्धन में रहकर प्रयत्न करता तो कभी भी इस मान को नहीं प्राप्त कर सकता था और न इतने मनुष्यों के हृदय पर १६ सौ वर्ष से यहाँ न होते हुए भी अपना प्रभाव बनाये रखता।

प्रिय पाठकगण ! हजरत मुहम्मद साहब ने अरबस्थान के जङ्गली देशों में मूर्तिपूजा के जोर शोर (प्राबल्य) तथा रक्त की नदी को बहता हुआ देखकर उसके रोकने का प्रयत्न किया। मुहम्मद साहब के विरोधी उस समय संसार के मनुष्य थे, (यहाँ तक कि) उसके अपने परिजन कुरैश भी उसको हानि पहुँचाने पर तुले हुए थे और अरबस्थान की अन्य सब जातियाँ भी इसके प्रतिकूल हो गईं, परन्तु इसने क्या किया? आरम्भ में तो इस महापुरुष ने संसार के विरोध पर ध्यान न दिया जिसके कारण संसार के एक बड़े भाग पर इसने अधिकार जमा लिया, परन्तु यह मूर्ख तथा धैर्य से शून्य था, अतः अन्त में संसार के दासत्व में फंस गया। शहवतपरस्ती (कामासक्ति) तथा क्रोध ने उसको अपने सिद्धान्तों से गिरा दिया और वह एक धार्मिक शक्ति के बदले, जिसका उद्देश्य संसार में शान्ति स्थापित करना था, पॉलिटिकल (राष्ट्रीय) भाव फैलाने लगा जिनका प्रभाव संसार की शान्ति के लिए हानिकारक सिद्ध हो चुका है। उसने जिहाद की ऐसी बुरी शिक्षा (खुंखार तालीम) अरब तथा अफगानिस्तान के जङ्गलियों को दी कि जिसने संसार को लाभ के बदले बहुत हानि पहुँचाई।

प्रिय पाठकगण! क्या कारण है कि बुद्ध, शङ्कराचार्य और मसीह अपने सिद्धान्तों से पतित नहीं हुए, परन्तु हजरत मुहम्मद हो गये? इसका बड़ा भारी कारण जहाँ तक सोचा गया है यह है कि बुद्ध ने राज्य के बन्धन को गले से उतार दिया, स्त्री आदि को छोड़ दिया था। शङ्कराचार्य को तो यह रोग छू तक नहीं गया था और मसीह तो इस रोग से पूर्णतया बचा रहा। इसीलिए ये तीनों महात्मा सफल हुए। मुहम्मद साहब ने खदीजा आदि से विवाह करके संसारी बन्धन अपने गले में लिया था, अतः जिस समय संसार के विरुद्ध वह कुछ करना चाहते थे उस समय संसार एक ऐसा झटका देता था कि उसकी अपनी सारी सुधि भूल जाती थी। दूसरे, मुहम्मद साहब में क्रोध का वेग अरबस्थान में जन्म होने एवं बुद्धिहीनता के कारण इतना था कि जिस समय वह कुरैशों द्वारा दुःखी किये गये, तब निज अपमान स्मरण करते थे, तुरन्त ही बदले का विचार प्रबल हो जाता था और खुदा के भरोसे तथा वास्तविक विचार से दूर जा पड़ते थे।

प्रिय पाठकगण! वर्तमान समय में जब स्वामी दयानन्द ने देखा कि समस्त मनुष्य–जीवन के उद्देश्य से अनभिज्ञ होकर कष्ट उठा रहे हैं तथा संसार के धार्मिक उपदेशक स्वार्थवश मनुष्यों को बहकाकर आपस में लड़ा रहे हैं और सत्य से सब अनभिज्ञ होकर केवल पक्षपात एवं हठधर्मी से एक–दूसरे को बुरा कहने की बान पकड़ गये हैं। प्रत्येक मनुष्य अपने घमण्ड में अपने असत्य विचारों को सत्य समझ रहा है तथा दूसरों के सत्य विचारों को भी झूठा बनाने का प्रयत्न कर रहा है। एक ओर लालच देकर मनुष्यों को अपने धर्म से पतित किया जाता है, दूसरी ओर भय और तलवार दिखाकर अविद्या का राज्य जमाया जाता है। तीसरी, ओर झूठी शिक्षा द्वारा मनुष्यों के विचारों को भ्रमात्मक करके नास्तिक बनाया जाता है और चौथी ओर कानून की पेचदार तकरीरों द्वारा मुकद्दमाबाजी तथा फूट का जोर बढ़ाया जाता है। सारांश यह कि हर ओर संसार के दासत्व की प्रबलता बढ़ रही है। भाई ही भाई के नाश करने को प्रस्तुत है; ऐक्य का नामोनिशान नहीं। धर्म–धर्म कहने को तो बहुत है, परन्तु करने का किसी को ध्यान भी नहीं। ऐसी दशा में तब उस महात्मा ने सुधार पर कमर कसी। विरोध आरम्भ हुआ। एक ओर समस्त संसार के बीस करोड़ मुसलमान–अमीर, नवाब और बड़े पराक्रमी पहलवान, दूसरी ओर ईसाई जिनकी बादशाहत पश्चिम से पूर्व तक फैल रही थी, तीसरी ओर सारे हिन्दू २४ करोड़ की संख्या में थे। बड़े–बड़े राजा, महाराजा, सेठ, साहूकार, पण्डित, संन्यासी और गुसाईं मुकाबले पर थे। सबका विरोधी वह ईश्वर का भक्त था। किसी से सन्धि न थी। सब विरोध पर कटिबद्ध थे। बड़े–बड़े शास्त्रार्थ हुए। प्रतिपक्षियों ने खूब जोर लगाया। जब विद्या के बल से काम न चला तो ईंट और पत्थर बरसाये। हुआ क्या? महात्मा तनिक भी नहीं घबड़ाया। वरन् जितना विरोध बढ़ता गया उनको अपनी सफलता की आशा बढ़ती दिखाई दी। पहले मौखिक उपदेश तथा शास्त्रार्थ किये, फिर पाठशालाएँ खोलीं। तत्पश्चात् समाज बनाना, वेदभाष्य करना एवं अपने सिद्धान्तों के प्रचारार्थ पुस्तक रचनी आरम्भ की। परिणाम क्या हआ? संसार के सामने स्वामी दयानन्द

अकेला संन्यासी, जिसके पास एक लङ्गोटी के अतिरिक्त कोई और वस्तु न थी, सफलता को प्राप्त हुआ।

प्रिय पाठकगण! बहुधा मनुष्य कहते हैं कि यदि स्वामी दयानन्द ने ५० सहस्र अथवा एक लक्ष मनुष्य अपने विचार के बना लिये तो क्या हो गया? ३० करोड़ मनुष्य तो भारतवर्ष में ही हैं। इस दशा में तीन सहस्त्र मनुष्यों में से एक मनुष्य ले लेना कोई बड़ी बात नहीं है, परन्तु स्मरण रहे कि यदि विजेता को विजय में एक मोती मिल जावे तो बहुत है, जबकि ये तो एक लक्ष मनुष्य हैं, क्योंकि समस्त संसार के मुकाबले में एक मनुष्य का खडे रहना ही असम्भव सा है। तो फिर उससे छीन लेना कोई बड़ी वीरता नहीं हैय किन्तु यह तो विचार कीजिए कि एक मनुष्य के पास ५० गाँव हैं और दूसरे के पास एक भी नहीं। अब यदि दुसरा मनुष्य पहले से लड़कर एक गाँव छीन ले तो आप वीर किसे कहेंगे? और फिर लडाई भी ऐसी जिसमें छल या फरेब का लेश न हो। अजी! गाफिल (अचेत) पाकर काम कर लेना और बात है, परन्तु संसार से डङ्के की चोट मैदान (क्षेत्र) में मुकाबला करना और। उसको जीतकर उसका भाग छीनना बहुत ही असम्भव है।

प्रिय पाठकगण! हिन्दू पण्डितों और स्वामी दयानन्द का मुकाबला तो इतना प्रशंसनीय नहीं, क्योंकि हिन्दुओं का तो यह बिना मुकाबला किये ही वेदवेत्ता ब्राह्मण तथा संन्यासी होने के कारण गुरु था ही! परन्तु बात तो यह है कि उसकी प्रबल शक्ति ने वह समय दिखाया कि जो पादरी हमारे हिन्दुओं को धार्मिक शास्त्रार्थ तथा धर्म–निर्णय के लिए चैलेञ्ज (आह्वान) करते थे और हमारे हिन्दू भाई जिनसे शास्त्रार्थ करते हुए घबड़ाते थे, अब उस ऋषि के प्रयत्न से एक उलटी ही अवस्था में हो गये, अर्थात् अब हिन्दू और आर्य तो ईसाइयों को शास्त्रार्थ के लिए ललकारते हैं, परन्तु वे इनसे ऐसे कतराते हैं कि जहाँ कहीं मुठभेड़ हुई तो वे यह कहकर कि 'हमारा समय हो गया अथवा तुम्हें शैतान बहका गया' चल देते हैं। दूसरे, हमारे मौलवी साहब जो पहले हिन्दुओं को बुतपरस्त (मूर्तिपूजक) और स्वयं अपने को ईश्वर की उपासना करनेवाला सिद्ध करते थे और हिन्दू पण्डित सर्वदा उनके साथ शास्त्रार्थ करने में घबड़ाया करते थे, आज उनसे शास्त्रार्थ करने को तैयार नहीं, और जब कभी कहीं छिड़ गया तो मौलवी साहब क्रोध में आकर लड़ने लग जाते हैं।

प्रिय पाठकगण! यदि आप तनिक ध्यानपूर्वक विचारें कि तीस वर्ष पूर्व हिन्दुओं को मुसलमान अपने मत में मिला लेते थे और बहुतों को अपने मत में खींच ले–जाते थे। यही दशा ईसाइयों की थी। यहाँ तक कि कई करोड़ मनुष्य तो मुसलमान हो गये और कोई २५ लक्ष हिन्दू ईसाई हो गये, परन्तु स्वामी दयानन्द के थोड़े–से प्रयत्न ने काया यहाँ तक पलट दी कि अब वर्षों के बिगड़े हिन्दू ईसाई और मुसलमानी मतों को छोड़कर अपने सत्य सनातन धर्म की ओर चले आ रहे हैं। आप चकित होंगे कि उलटी गङ्गा कैसे बहने लगी? परन्तु आपको स्मरण रखना चाहिए कि यद्यपि जल अपने स्वभाव से नीचे की ओर बहता है, परन्तु सूर्य की आकर्षण शक्ति उसको आकाश की ओर ले–जाती है। इसी प्रकार यद्यपि हिन्दू अपनी विद्या को भूल जाने से (स्वभावतः) इस्लाम और ईसाइयत के गड्ढे में जा रहे थे, परन्तु स्वामी दयानन्द ने जो ४८ वर्ष के ब्रह्मचर्य से आदित्य ब्रह्मचारी की पदवी प्राप्त कर चुका था, अपनी आकर्षण–शक्ति से उनको उन गड्ढों से निकालकर फिर ऋषियों के सत्यमार्ग पर, जो आकाश से भी ऊँचा है, ले जाने का प्रयत्न किया है।

प्रिय पाठकगण! जिस प्रकार सूर्य की किरण पृथ्वी पर से जल खींचती हुई दिखाई नहीं पड़ती सिवाय ग्रीष्म ऋतु के, इसी प्रकार स्वामी दयानन्द का उपदेश भी प्रत्यक्ष कोई काम करता नहीं दीख पड़ता, परन्तु यदि आप विचारपूर्वक दृष्टिपात करें तो पता लगेगा कि स्वामी दयानन्द ने वैदिक ईश्वरीय धर्म को छोड़कर समस्त मनुष्यकृत मतों को, जिन्हें बुद्धि से काम लेने का कोई प्रयोजन नहीं, जड़ से उखाड़ दिया है। यद्यपि मनुष्य चारों ओर नाना प्रकार की टिप्पणी रूपी पैबन्द लगाकर अपने मतों को बनाये रखना चाहते हैं, परन्तु सम्भव नहीं कि कोई दीपक सूर्य के सम्मुख काम कर सकेय अथवा कोई मनुष्य जिसके नेत्रों में किसी प्रकार का दोष न हो, सूर्य के होते हुए दीपक जलाकर व्यर्थ में अपना तेल गँवावे।

अतः हे प्रिय भ्राताओ! यदि आप सफलता की इच्छा रखते हैं तो संसारी बन्धन को तोड़कर फेंक दो और सच्चे हृदय से प्रयत्न में लग जाओ। फिर देखो, कितनी शीघ्र सफलता प्राप्त होती है।

****

दीपावली पर सफाई

– डॉ. राकेश 'चक्र'

दीपावली के आगमन से पूर्व बच्चों के साथ–साथ बड़ों में भी उमंग–उत्साह हिलोरे मारने लगता है। अधिकांश हिन्दू समुदाय के लोग अपने–अपने घरों की सफाई–पुताई आदि कर कूड़ा–करकट, गंदगी को घर से बाहर निकालते हैं। अनुपयोगी सामान को कवाड़ी को विक्रय करते हैं। घर में धनतेरस के दिन बाजार से अनेकानेक उपयोगी सामान को क्रय करते हैं। विशेषकर लक्ष्मी–गणेश की मूर्तियाँ, खील, बताशे, खिलौने, मोमबत्तियाँ, मिट्टी से बने दीए, खाने–पीने का सामान एवं पूज्य सामग्री आदि प्रमुख रूप से प्रत्येक आय वर्ग के लोग ही क्रय करते हैं। कुछ साधन सम्पन्न लोग अन्य सामान जैसे फ्रिज, आलमारी, मोटर साइकिल एवं कार आदि का क्रय करते हैं। पूरा बाजार ऐसे सामानों से पट जाता है। मनलुहावन ऑफर भी बाजार में रहते हैं तथा कुछ लोग (कम आय वर्ग के) लालचवश कई सामान ऐसे क्रय कर लेते हैं कि बाद में उन्हें उसकी किस्तें चुकाना भारी पड़ जाता है अर्थात घर का बजट बिगड़ जाता है। लेकिन लोग हैं कि थोड़ी देर की खुशी पाने के लिए कई वर्षों की खुशियों को दाँव पर लगा देते हैं।

इस बार नगर, कस्बों के बाजारों में भी काफी चहल–पहल थी। दूकानों का सामान सड़क पर आ गया था। पैदल निकलना मुश्किल था। तब साईकिल, रिक्शे वालों तथा अन्य दोपहिया–चौपहिया वाहनों का निकलना तो और भी मुश्किल था। ऑटो वाले नियम–कानूनों की अन्य शहरों में क्या, इस शहर में भी धज्जियां उड़ा रहे थे। बड़े सीना ठोंक कहते हैं कि हम ऊपर तक देते हैं, हमारा कोई क्या बिगाड़ लेगा।

कई स्थानों पर अवैध रूप से आतिशबाजी बनाने के कारण जबरदस्त धमाके हुए। जिसमें दर्जनों लोगों के चिथड़े उड़ गए तथा कई घायल हो गये। कई स्थानों पर मकान ढह गए, साथ ही आस–पास के मकानों को भारी क्षति पहुँची। औपचारिकता निभाने वाली पुलिस के बारे में लोग कहते सुने जाते हैं कि जो भी अवैध धंधा चलता है वह सब पुलिस की मिली भगत से ही चलता है। वैसे लोगों के कहने में काफी ताकत नजर आती है। पूरे देश में जगह–जगह आतिशबाजी बनाने का अवैध व वैध कारोबार खूब फल–फूल रहा है। हम बारूद के ढेर पर बैठे हुए हैं, कब बड़े हादसे हो जायें, जैसा कि छोटे–छोटे हादसे हुआ ही करते हैं। इसी आतिशबाजी के कारण प्रदूषण ही प्रदूषण तथा साथ ही धन की बरबादी हो रही है। बढ़ते प्रदूषण से श्वास की बीमारियाँ फैल रही हैं तथा क्षितिज में ओजोन परत में क्षति हो रही है।

समाज के लोगों द्वारा पुण्य कार्यः–

समाज में अशिक्षित तो अशिक्षित, शिक्षित भी एक महान कार्य कर रहे हैं कि अपने आस–पास पड़े कूड़े के ढेर में आग लगाकर हाथ सेंक रहे हैं। कूड़े में होती हैं प्लास्टिक की पिन्नियाँ, जो जलने पर अनेक प्रकार की विषैली गैसों का उत्सर्जन कर रही हैं। यही गैस हमारी श्वासों में जाकर अनेक प्रकार के रोगों को उत्पन्न कर रही हैं। मैं भी ऐसे नेक काम करने वालों से रूबरू होता हूँ। समझाने का प्रयास करता हूँ, लेकिन लोग हैं कि कहते हैं – कहाँ ले जाएँ इन मोमजामे की पिन्नियों को.. इन्हें तो जलाना ही पड़ता है.. गन्दगी अच्छी नहीं लगती .. सफाई कर्मी भी कहाँ पीछे रहने वाले हैं कि वह भी इस नेक काम में पूरा साथ निभाते हैं। जगह–जगह वह इसकी आहुतियाँ देते रहते हैं। क्या दीवाली, क्या होली? प्रतिदिन यही चला करता है।

इन्हीं मोमजामे की पन्नियों से नालियाँ अट जाती हैं। भयंकर बदबू आती है। बरसात में सड़कें नदियाँ बन जाती हैं। लेकिन लोग हैं कि वे ऐसी मोटी खाल के हो गये हैं कि उनकी सेहत पर कोई असर नहीं। इसकी मुख्य जड़ में जाएँ कि आखिरकार ये सब क्यों हो रहा है? किसके कारण हो रहा है? क्या इसे रोका जा सकता है। ये सब सोचने के लिए उनके पास समय नहीं, चाहे इन सबके कारण समय तथा मुफ्त में बीमारियों से धन की बरबादी हो रही हो, लेकिन

सुविधाभोगिता के मायाजाल ने सबकी आँखों पर चश्मा लगा दिया है। इसमें गरीब, मध्यम और उच्च वर्ग सब शामिल है। अब घर से कोई थैला (बैग) आदि लेकर नहीं चलता। घर से बाजार में सामान लेने जाते समय खाली हाथ चलना सुविधाजनक लगता है। दुकानदार सामान को भी प्रत्येक मोमजाने की पिन्नियों में देना सुविधाजनक समझते हैं तथा ग्राहक भी चाहता है कि उसे मोमजामे की पिन्नियों में ही सभी सामान मिले। मान लीजिए घर में प्रतिदिन बीस प्रकार के सामान की जरूरत है तो घर में सामान के साथ बीस मोमजामे की थैलियाँ आ जाती हैं, अब सोचिए कि वह कहाँ जाएँगी। बाद में वह नाले–नाली, गलियों या सड़कों पर फेंकी जाएँगी। कुछ लोग उन थैलियों में बासी सब्जी, दाल, चोकर, रोटी या सब्जी छिलके आदि अन्य कूड़ के साथ भरकर फेंक देते हैं। उसे वैध–अवैध, भूखे–पशु ही खायेंगे। इस तरह वे उन्हें खा–खा कर बीमार हो जाते हैं तथा जल्दी ही मौत के मुँह में चले जा रहे हैं।

सुविधाभोगी, विवेकहीन लोग इस तरह से पुण्य के भागी बन रहे हैं :–

एक साहब इण्टरमीडिएट कालेज में पढ़ाते हैं, साथ ही उनकी पत्नी भी शिक्षिका हैं। उनके मकान के सामने एक नींव भरा हुआ प्लाट खाली पड़ा है। उसी में वह व अन्य लोग प्लास्टिक की पन्नियों में कूड़ा भर–भरकर डाला करते हैं। उन साहब ने दीपावली से दो दिन पूर्व तक बाँस की सहायता से तमाम प्लास्टिक की पिन्नियाँ भरे कूड़े को एकत्रित किया और आग लगा दी। चारों ओर दुर्गन्ध ही दुर्गन्ध फैल गयी।

इसी तरह के पुण्य के कार्यों को करते हुए दीपावली से पूर्व अनेकानेक लोगों को देखा तो हम आश्चर्यचकित रह गए कि अनपढ़ तो अनपढ़, ये अपने को शिक्षित कहने वाले लोग भी प्लास्टिक की पिन्नियों में भरे अन्य कूड़े तथा कूड़े को, आग की भेंट चढ़ा रहे हैं। तमाम तरह की बीमारियाँ स्वयं ले रहे है और दूसरों को भी मुफ्त में परोस रहे हैं।

उपर्युक्त शिक्षक और शिक्षिका को भी हमने मधुमेह, उच्च रक्तचाप तथा श्वास आदि की बीमारियों से ग्रसित पाया।

लोग हैं कि हर कार्य शार्टकट में करना चाहते हैं, चाहे इससे अपरोक्ष रूप से स्वयं को नुकसान हो रहा हो या दूसरों को, लेकिन वे करेंगे वही जो शीघ्र से शीघ्र निपट जाए।

दीपावली के अवसर पर लोग लालची स्वभाव के कारण जुआ खेलते हैं, जो जीतता है, वह खुश होता है तथा जो हारता है वह खीझ और दुख में घर में अशान्ति फैलाता है, अपने साथी पर हमला करता है या स्वयं को या पूरे परिवार को पूरी तरह बरबाद कर लेता है या आत्महत्या जैसा कदम भी उठा लेता है।

अब ऐसे नेक काम करने वालों से पूछिए कि भाई कौन से शास्त्र में लिखा है या जिसने शिक्षा दी है कि जुआ खेलकर स्वयं को और समाज को बरबाद करो। कोई तो ऐसा नहीं कहता है, लेकिन लोग हैं कि बिना सोचे–समझे लालचवश किए जा रहे हैं और उसका परिणाम भी भोग रहे हैं।

मैं छोटी दीपावली के दिन एक थाना में बैठा था कि यकायक एक युवक खून से लथपथ थाना आया। उसके साथ दस–पन्द्रह लोग परिजन, साथी तथा तमाशबीन भी थे। पता लगा कि इस युवक का जुआ खेलने के दौरान विवाद हुआ तथा, दूसरे साथी जुआरी ने इस पर ईंट से हमला कर दिया।

नगरों में सायं से ही चाइना से आयातित भिन्न–भिन्न रंगों की झालरें, घरों की दीवारों पर रोशनी से दमक उठीं। इन्हीं सबके चलते चाइना में लक्ष्मी बरस रही है। लोग लक्ष्मी–गणेश जी की पूजा–अर्चना के बाद घरों की मुंडेरों एवं घर के सभी प्रमुख स्थानों पर दीए एवं मोमबत्ती आदि लगा रहे थे। रात्रि आठ बजे से बम–गोलों की बरसात प्रारम्भ हो गई, जो देर रात तक चलती रही। आसमान में जा रहा धुआँ ये कह रहा था कि अपने हाथों से लोग अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारकर, अपने वैभव का प्रदर्शन कर रहे हैं। मैं घण्टों इस नजारे को छत से देखता रहा और सोचता रहा कि आतिशबाजी बनाने वालों से ज्यादा इसका प्रयोग करने वाले अधिक दोषी हैं, क्योंकि निर्माता तो वही वस्तुएँ निर्माण करता है, जो उसके ग्राहक चाहते हैं।

कई लोग आतिशबाजी का प्रयोग करते समय झुलस गए थे। उनके घरों में चीख पुकार मचती रही।

उन्हें अस्पताल ले जाया गया, तभी गाजियाबाद से धर्मपत्नी जी का फोन आ गया था कि घर में श्वास लेना मुश्किल हो गया है, चारों ओर धुआँ–धुआँ फैला है, सब खिड़की–दरवाजे बंद कर लिए हैं..........।

रात्रि में डेढ़ बजा था, मैं लघुशंका के लए जगा, तो यकायक दर्जनों बार ऐसे गोले दगे कि लोग गहरी नींद से जग गए।

भोर हुई तो पूर्व से लालिमा उदय हो रही थी कि कुछ ही देर में अदभुत, अलौकिक सूर्य उदय हो गए। सूर्य का प्रकाश चारों ओर फैलने के बाद भी लोग घरों पर जलती झालरें एवं बल्बों को बंद नहीं कर रहे थे, शायद ऐसा लग रहा था कि वे सूर्य को चुनौती दे रहे हों या उनकी विद्युत चोरी से प्रयोग की जा रही हो, क्योंकि जगह–जगह घरों से खम्भों में लगे कटिया तारों से, तो ये ही महसूस हो रहा था।

दीपावली का पर्व रोशनी कर, खुशियाँ बांटने का पर्व है। लेकिन लोग हैं कि विवेकहीन, संवेदहीन होकर दीपावली के पर्व पर वो कर रहे हैं जो उन्हें नहीं करना चाहिए। मैं सोचता हूँ कि लोग दीपावली का पर्व मना रहे हैं या अपना समाज या राष्ट्र का दिवाला निकाल रहे हैं। मेरा सभी से नम्र निवेदन है कि पर्व को पर्व की तरह मनाइए। आपस में प्यार बढ़ाइए और सभी को खुशियाँ बाँटिए। ऐसे कृत्य मत करिए, जिससे स्वयं को, समाज और राष्ट्र को अपरोक्ष या परोक्ष रूप से हानि न होती हो।

आई दीवाली

प्यारे बच्चो, आइ दीवाली
जी भरकर हंसना गाना,
धूम–धड़ाका करना
फुलझड़ियों से घर को चमकाना ।।

लेकिन अपने सुख में
दीनों–दुखिओं की भी याद रहे,
दीपक एक किसी अंधियारी
कुटिया में भी रख आना ।।

– सीतेश आलोक

दीप घर–घर में जलाओ

तुम दया के दीप बनकर दुख का हर तम मिटाओ।
पर्व यह दीपावली का दीप घर घर में जलाओ।।

सबसे प्रथम तो स्वच्छता की बात ही अनिवार्य है।
घर बार आंगन और गली की शुद्धि पहला कार्य है।
शोधन कहीं मार्जन कहीं क्षालन व लेपन भी कहीं।
मंडन व चित्रण आदि से सुंदर बना दो यह मही।।
सब वस्तुओं वसनादि की भी गंदगी को तुम हटाओ।।
पर्व यह दीपावली का दीप घर–घर में जलाओ।।

मीत बन, मन के दीए में स्नेह का घृत– तेल डालो।
सद्गुणों की वर्तिका कर ज्योति स्मिति की जला लो।
थाल दीपों का लिए प्रिय तुम मेरे घर आज आना।
राह देखूंगा तुम्हारी परिजनों को साथ लाना।
आगमन से तुम मेरे इस सदन की शोभा बढ़ाओ।
पर्व यह दीपावली का दीप घर–घर में जलाओ।।

सब सजाकर थाल सुंदरदीप लेकर जगमगाते।
एक दूसरे के गेह पहुंचें मुदित मन हो गुनगुनाते।
कुछ भेंट या उपहार भी होवे सभी के हाथ में।
सत्कार व आतिथ्य कर बैठें सभी मिल साथ में।
इस भांति प्रेमालाप से त्यौहार खुशियों का मनाओ।।
पर्व यह दीपावली का दीप घर घर में जलाओ।।

फिर वेद के स्वर गूंज उठें झोपड़ी– प्रासाद में।
यज्ञादि पूजन स्तवन से हों मग्न सब आह्लाद में।
मृदु गीत और संगीत में प्रभु के गुणों का गान हो।
सब लोग सहभागी बनें, सबगुरुजनों का मान हो।
कुछ खेल स्पर्धादि का भी खूब आयोजन कराओ।।
पर्व यह दीपावली का दीप घर घर में जलाओ।।

यह मिलन का पर्व है, अभिमान तज सबसे मिलो।
हो अपरिचित या कि परिचित प्रीति से वंदन करो।
क्या लाभ खुशियों का अकेले भोग करने से भला।
यह राक्षसों की वृत्ति है, बस सोचना अपना भला।
तुम दिव्य हो ऋषि पुत्र हो परमार्थ में जीवन लगाओ।
पर्व यह दीपावली का दीप घर घर में जलाओ।।

– वेद कुमार दीक्षित
देवास (म.प्र.)

महर्षि दयानन्द : समाज, वेद और मानव धर्म के ज्योति पथ के उद्धारक

– अखिलेश आर्येन्दु

महर्षि दयानन्द के वैदिक विचार अपने आप में इतने उपयोगी, व्यावहारिक और निष्पक्ष हैं कि यदि उन पर गौर किया जाए तो दुनिया की तमाम जटिलताएँ, समस्याएँ, विसंगतियाँ, हिंसा, विकृतियाँ, दुर्वृतियाँ और अनाचार खत्म हो सकते हैं। यदि हम दयानन्द को दयानन्द की अंतर–दृष्टि से समझने की कूबत रखते हों। दयानन्द की सबसे बड़ी खाशियत यह है कि वे 'बाबा वाक्य प्रमाणम्' को धोखा कहते हैं और उससे बचने के लिए प्रेरित करते हैं।

एक ऐसा युगधर्मी महामानव जिसने तत्कालीन विद्वत समाज, धर्म के धुरंधरों और विचारकों को ही नहीं उस वक्त के रजवाड़ों को भी नई दिशा दी। उन्होंने अपने किसी विचार को रूढ़ि में बाधना कभी अच्छा नहीं समझा। इस लिए दयानन्द एक ओर जहाँ प्रगतिवादी हैं तो वहीं अत्यंत गंभीर तर्कवादी, जहाँ वे धर्म को तर्क पर कसकर स्वीकारने की बात करते हैं तो अध्यात्म को अपने अनुभव और क्रिया पर। मानव की भलाई जिसमें हो, दयानंद उस बात को उस कार्य को सबसे बेहतर और हितकारी मानते दिखाई पड़ते हैं। सत्यार्थ प्रकाश में जो विवेचनाएं प्रस्तुत की हैं और ज्ञान–विज्ञान को तर्कसंगत ढंग से रखा है, वह सारा का सारा ज्ञान और तथ्य मानव समाज के सुधार, सुख, शांति, आपसी प्रेम, करुणा, दया, सहिष्णुता, न्याय, अहिंसा की स्थापना, सत्य को आधार मानकर और शुभत्व को ध्यान में रखकर ही प्रस्तुत किया। दुराग्रह, आग्रह, स्वार्थ और किसी भी तरह का पक्षपात को दूर दूर तक दयानन्द के जीवन में हम नहीं पाते हैं।

वह अपने भ्रमण और कार्यों के दौरान यदि मुस्लिम नेताओं के यहाँ टिकते थे तो ईसाई और पारसी के यहाँ भी रहकर उपदेश देते थे। कोई ऐसा व्यक्ति या वर्ग नहीं था जो दयानंद के बारे में यह कह सके कि उन्होंने उसके साथ भेदभाव किया या अन्याय किया। क्षमा, दया, करुणा, न्याय, धर्म और सत्साहस तो उनके रोम–रोम में पिरोया हुआ था। इस लिए दयानंद को आज के संदर्भ में हमें उनके समग्र विचारों, कार्यों, व्यवहारों और चरित्र को पूरी तरह निष्पक्ष और अपने आग्रह–दुराग्रह से अलग हटकर समझने की जरूरत है। यदि दयानन्द हमें सही मायने में समझ आ गये तो समाज और संस्कृति तथा तथाकथित धर्म के नाम पर होने वाले पाखंडों और अनाचारों को बहुत कम समय में खत्म किया जा सकता है।

आज धर्म, अध्यात्म और समाजसेवा के नाम पर जिस तरह से आम जनता को ठगा और लूटा जा रहा है, उसका समाधान यदि किसी महामानव के पास है तो वह दयानन्द के पास है। दयानन्द जहाँ धर्म के असली रूप, रंग और ढंग को बताते हैं तो अध्यात्म के महत्त्व को भी जीवनोत्थान और समाजोत्थान के परिपेक्ष्य में समझाते हैं। वह सेवा के असली मर्म को समझाते हैं और प्रेरणा देते हुए कहते हैं, यदि मानव हो तो अपने मानव होने के नाते अपने कर्तव्यों को समाज के कल्याण के लिए समर्पित करो। समाज कल्याण के मद्देनजर ही उन्होंने शिक्षा और संस्कार को बेहतर ढंग से देने पर जोर दिया, साथ ही अनेक वैदिक शिक्षा केंद्र खोले जो वैदिक शिक्षा प्रणाली के अनुरूप थे।

दयानन्द ने वेदों को मानव जाति के कल्याण के लिए जरूरी बताया और कहा–वेद में वर्णित शिक्षा, विज्ञान, धर्म, अध्यात्म, कृषि, उद्योग–धंधे, चिकित्सा, राजनीति, समाजनीति, संस्कृति और जीवन कल्याण के सूत्रों को न जानने के कारण समाज में इतनी अव्यवस्थाएं, समस्याएं, जटिलताएं और कुरीतियां फैली हुई हैं। ईश्वर के सही रूप, धर्म के सच्चे स्वरूप, विज्ञान की उपयोगिता, राजनीति के कल्याणकारी सूत्र और समाजनीति के सर्वकल्याण के सारे विषयों को उन्होंने तर्कसंगत और विज्ञान संगत ढंग से रखा। सत्यार्थ प्रकाश और उनकी लिखित अन्य पुस्तकों में सभी चीजों को देखा जा सकता है। दयानन्द ने किसी को धर्म, अध्यात्म, विज्ञान, सेवा, समाज, संस्कृति और

मानव उत्थान के नाम पर होने वाले लूट और ठगी से बचने के सूत्र बताया। वह मत, मजहब को धर्म से अलग किया। उन्होंने कहा, धर्म में किसी प्रकार की संकीर्णता, स्वार्थ, हिंसा, दुराग्रह, विकृति और बुराइयां नहीं होनी चाहिए। यदि ऐसी चीजें वहां समाहित हैं तो वह धर्म नहीं कुछ दूसरा ही होगा।

दयानन्द यह नहीं कहते कि तुम मेरी शरण में आओ, मैं तुम्हें स्वर्ग या मोक्ष दिला दूंगा। दयानन्द यह भी नहीं कहते कि मेरी प्रत्येक बात को हर किसी को आंख मूंदकर मान लेना चाहिए। उन्होंने बहुत साफ शब्दों में कहा, –यदि मेरी कहीं बातें किसी को नहीं रुचती या समाज के अनुरूप नहीं लगती तो ज्ञानवान लोग मिल–बैठकर उसमें सुधार कर लें। ईश्वर, धर्म, योग, शिक्षा, अध्यात्म और कल्याण के नाम पर समाज में बढ़ रहे अनाचार, अनैतिकता, अमानवीयता, हिंसा, शोषण, जुल्म और हर तरह के भेदभाव को पूरी शक्ति के साथ उन्होंने तब रोका था जब समाज पूरी तरह से दिग्भ्रमित हो चुका था। उन्होंने चरित्र की साफगोई को मानव के लिए सबसे जरूरी बताया। उनका चरित्र गंगोत्री के गंगा जल जैसा निर्मल तो नवनीत जैसा मुलायम। जो बातें दयानंद समाज और व्यक्ति कल्याण में कहते हैं, सभी वेद के आधार पर हैं। उन्होंने कहा, मैं अपनी तरफ से कुछ नया नहीं कह रहा हूं, बल्कि ब्रह्मा से लेकर जैमिनी तक के सभी ऋषियों ने जो विश्व कल्याण में कहा, उसे ही आगे बढ़ा रहा हूं।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के जरिए समाज सुधार, समाजहित, धर्म उत्थान, संस्कृति उत्थान, समाज विकास और भाषा हित में आंदोलन चलाए। अंग्रेजों को देश से भगाकर देश को आजाद कराने का यदि किसी ने पहली बार अंग्रेजों को ललकारा, तो वह दयानंद थे। देश की दुर्दशा देखकर जहाँ अत्यंत व्यथित होते हैं वहीं पर महिलाओं, दलितों, पिछड़ों, असहायों, निर्धनों और दीनहीन लोगों के ऊपर हो रहे जुल्म, शोषण, अत्याचार, हिंसा और प्रताड़ना को देखकर उनके कल्याण के लिए भी आगे आते हैं। उन्होंने जात–पाँत, छुआछूत, भेदभाव, अशिक्षा, महिलाओं की दुर्दशा और गौवंश के विनाश को रोकने के लिए भी अनेक कार्य किए। ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ दयानंद की दृष्टि न गई हो। वह ऐसा सत्साहसी, सत्यवादी, परोपकारी, दयावान, क्षमावान, ज्ञानवान और धर्म संवाहक महामानव थे जिनके रोम–रोम में मानव, समाज, देश, संसार और सर्वहित की भावना निहित थी। उन्होंने वेदों का उद्धार किया, तो हिंदी भाषा को आर्य भाषा(श्रेष्ठ), संस्कृति के उन्नयन और समाज के प्रत्येक वर्ग के कल्याण के लिए अनगिनत कार्य किए।

आर्यसमाज आज भले ही समाज सेवा, समाज सुधार, धर्म उत्थान, अध्यात्म प्रचार और संस्कृति रक्षा के कार्य वैसा न कर पाता हो–जैसा महर्षि चाहते थे, लेकिन आज भी आर्यसमाज का प्रयास यही रहता है कि देश, समाज, संस्कृति, हिंदी भाषा, संस्कृत भाषा, स्वदेशी, शाकाहार, स्वालम्बन और लोगों के चरित्र निर्माण के कार्य में उसकी भूमिका किसी न किसी रूप में होनी ही चाहिए।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज रूपी जो वटवृक्ष लगाया था उसने आजादी की लड़ाई से लेकर आजादी मिलने के बाद अनगिनत कार्य किए। आज भी अपनी शक्ति के मुताबिक समाजसेवा और धर्म उत्थान के कार्य में लगा हुआ है। महर्षि दयानन्द ने जिस आर्यसमाज को मानव–कल्याण को ध्यान में रखते हुए लगाया था, उसे पुनः नए सिरे से कार्य करने में जुटना चाहिए।

इति **

आर्ष क्रान्ति पत्रिका के लिए आर्य लेखक बन्धु अपनी सर्वश्रेष्ठ रचनाएँ भेंजे।

दीपावली संदेश

– वेदप्रिय शास्त्री

दीवाली दीप जलाने का पर्व है। अमावस की रात जितनी अधिक काली होती है दीवाली उतनी ही छविशाली होती है। दीवाली का सन्देश क्या है ? किसी कवि ने लिखा है –

पतझड़ से व्याकुल हो जाए,
वह फुलवारी का माली क्या।
पीले पत्ते गिरते न अगर,
तो हरियाती हर डाली क्या।
जिसने दुख देखा नहीं कभी,
घड़ियां उसको सुख वाली क्या।
काली न अमावस होती अगर,
तो छवि पाती यह दीवाली क्या।।

दिए की सार्थकता तो अंधेरे में ही है। जो जितना अधिक अंधेरे से त्रस्त है वह उतना ही अधिक दीपक के महत्व को समझता है। प्रकाश में रहने वाले दीपक का मूल्य नहीं समझ सकते। उजाले में दीपक जलाना भी कोई समझदारी नहीं है। सूरज को दीपक दिखाने की कहावत तो आपने सुनी ही है। सूरज की अनुपस्थिति में दीपक का ही एक सहारा है, जिनके पास दीपक नहीं है उन्हें अंधेरे का त्रास भोगना ही पड़ता है। अंधेरा क्या है ? अंधेरा और मृत्यु परस्पर पर्याय हैं। वैदिक संस्कृति यही कहती है **'तमसो मा ज्योतिर्गमय'**

इसकी व्याख्या में कहा गया है कि असत्, तमस और मृत्यु एक ही अर्थ वाले शब्द हैं । वैदिक लोग ज्योति के उपासक हैं अर्थात् जलती अग्निशिखा को अपना आदर्श मानते हैं। उनके अनुसार

मुहूर्त्तं ज्वलितं श्रेयः,
न चिरं धूमायितम् ।।

इसका अर्थ है कि – थोड़ी देर का जलना श्रेयस्कर है, बड़ी देर तक सुलगना और धुंआ छोड़ना ठीक नहीं है। तात्पर्य यह है कि हम जलते दीपक को अपना आदर्श मानते हैं, अगरबत्ती को नहीं । वैदिक संस्कृति से भिन्न सभी तथाकथित संस्कृतियाँ धुंए की उपासक दमघोंटू संस्कृतियाँ हैं। वैदिकों के इतिहास का वह काला दिन था जिस दिन जलता हुआ हवन कुण्ड धूनी या अगियारी में बदल गया था।

अंधेरा किसी को पसंद नहीं है। अंधेरे में जीवन भयग्रस्त और दुःखमय ही रहता है। फिर भी कुछ प्राणी ऐसे पाए जाते हैं जिन्हें उजाला अच्छा नहीं लगता। उल्लूओं का वश चले तो वे सूर्य के निकलने पर पूरी तरह पाबंदी लगा दें। चोरों का सबसे बड़ा शत्रु वह है जिसने दीपक का आविष्कार किया है । चमगादड़ दिन में अंधेरे स्थानों में छिपे उल्टे लटकते रहते हैं। कहते हैं जहाँ उल्लू और चमगादड़ बसते हैं वहां अन्य कोई निवास नहीं करता। घर श्मशान हो जाते हैं और चमन वीरान हो जाते हैं। इसीलिए वेद में उपदेश है कि –

उलूकयातुं जहि

अर्थात् ऐ मनुष्य! उल्लू की चाल छोड़ दे।

बर्बाद चमन करने के लिए जब एक ही उल्लू काफी है।
अंजामें गुलिस्ताँ क्या होगा, हर शाख पे उल्लू बैठे हैं।।

उल्लू, चमगादड़ आदि प्राणी उजाले से नफरत करते हैं, उसके साथ बगावत करते हैं और अपने उपास्य देव से वे 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' की प्रार्थना कभी नहीं करते। अतः ऐसे प्राणी भला दीवाली क्यों मनाने लगे।

जिस प्रकार भौतिक अंधेरा त्रास दायक और जीवन का शत्रु है, उसी प्रकार मनुष्य के लिए एक और अंधेरा है जो भौतिक अंधेरे से भी अधिक त्रासदायक होता है। यह है अज्ञान का अंधेरा। यह मनुष्य को पूर्णतया पराधीन बनाकर दुख से जकड़ देता है और मनुष्य जन्म को व्यर्थ बना देता है।

ज्ञान का प्रकाश ही एकमात्र ऐसा है जो अज्ञान तिमिर का नाश करके मनुष्य को दुखों के बन्धनों से मुक्ति दिला देता है। अतः अंधेरे से उजाले की ओर जाने से तात्पर्य है अज्ञान से हटकर ज्ञान प्रकाश की

ओर चलना और उसकी पराकाष्ठा तक पहुंचना। वेद के शब्दों में –

उद्वयम् तमसस्परि स्वः पश्यन्तः उत्तरम्।
देवम् देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।।

वेद के इस संदेश को भूल जाने के कारण आर्यजन शनैः– शनैः अंधेरे के उपासक बन गए और उल्लुओं चमगादड़ों और चोरों के साथ मिल गए। परिणाम स्वरूप शारीरिक और मानसिक दोनों तरह से पराधीन हो गए। हजारों साल से अब तक गुलामी का जीवन जीने को विवश हैं।

इन्हें अंधकार से निकालकर प्रकाश में ले जाने के लिए परमेश्वर ने एक दिव्यदीप भेजा जिसने इन्हें प्रकाश की पराकाष्ठा की ओर उन्मुख किया और सहस्रों बुझे हुए दीपकों को अपनी ज्योति से देदीप्यमान किया। परिणाम स्वरूप देश पराधीनता से मुक्त हुआ। अंधेरे पर उजाले की विजय हुई । अभी सब सम्हल ही रहे थे कि उल्लुओं ने अंधेरे की फौज के साथ मिलकर उस दिव्यदीप को फोड़ डाला और उसे बुझने के लिए विवश कर दिया। ठीक दीवाली के दिन वह दिव्य दीप बुझ गया उसका नाम था **स्वामी दयानन्द सरस्वती।**

प्रकाश चाहे भौतिक हो अथवा ज्ञान का हो वह परमेश्वर प्रदत्त होता है। किसी मनुष्य की औकात नहीं कि वह प्रकाश कर सके। इसलिए महर्षि स्वामी दयानन्द ने कहा था कि – **'वेदों की ओर लौटो!'**

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। और सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं, उन सब का आदि मूल परमेश्वर है।

उसने अंतिम समय कहा था कि मेरे पीछे खड़े हो जाओ परन्तु खेद है हम उसका अनुसरण नहीं कर सके और उन्ही उल्लुओं की शरण में जाकर उल्लू के पट्ठे बन गए जिन्होंने ऋषि दयानन्द की हत्या की थी।

जिन पर थी तेरी टिकी आश,
वे हुए अर्थ के क्रीत दास ।
बलिदान त्याग के पैरों में,
जकड़ा है आ कर स्वार्थ पाश।
नैतिक चारित्र्य शिक्षकों का,
बदनाम हो गया आज नाम।
ऋषि करें तुम्हें कैसे प्रणाम।।

संसार के लोगो! दयानन्द जैसा धवल चरित्र, सुदृढ़ विशाल व्यक्तित्व, ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण, मानव मात्र का हित चिन्तक तुम्हें ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा । वह एक ऐसा उज्ज्वल आदर्श (आईना) है जिसके समक्ष खड़े होकर तुम स्वयं को, समाज को, राष्ट्र को और विश्व को सम्यक सवाँर सकते हो। उठो दयानन्द से ज्योति ग्रहण कर निज का दीप जलाओ।

दीपक का निर्वाण बड़ा कुछ श्रेय नहीं जीवन का,
है सद् धर्म प्रज्वलित रह कर हरना तिमिर भुवन का ।

दीवाली का यही तकाजा है। इति। ***

कौन था वह व्यक्ति ?

१८८३ ई० का दीपावली का दिवस ?। अजमेर नगरी की भिनाय कोठी के कमरे के कक्ष में शय्या पर लेटा एक व्यक्ति जीवन की अन्तिम श्वासों से संघर्ष कर रहा था। वह व्यक्ति तूफानों से जूझते–जूझते स्वयं एक तूफान हो गया था। सहस्रों वर्षों की रूढ़ियों और अन्धविश्वासों से ग्रस्त मानवता को संजीवित करने के लिए उसने एक थपेड़ दी। जनता तिलमिला उठी। निद्रा से मूर्च्छित–सा पड़ा जन समूह नींद से जगाने वाले के प्रति तीखी आँखों से देखने लगा। सब उसके विरोधी हो गए – देशी भी, विदेशी भी, अपने भी और पराए भी, आस्तिक भी और नास्तिक भी। सबने मिलकर षड्यन्त्र रचा। वे पहचान न पाए उस व्यक्ति को जो उनके लिए ही जूझा था। वह अकेला था, भगवान ही उसका भरोसा था। विष के घातक प्रभाव से त्रस्त शरीर इस योग्य नहीं रह गया था कि वह अब इससे काम ले सके। **'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो'** – ऐसा कहकर इसने प्रभु का स्मरण किया । चेहरे पर हल्की सी सन्तोष की मुस्कराहट आयी, और वह चल बसा। जो कुछ कर सका उसने किया। वह व्यक्ति था – **दयानन्द।**

– डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में कुछ ऐतिहासिक जनों के विचार –

१–स्वराज्य और स्वदेशी का सर्वप्रथम मन्त्र प्रदान करने वाले जाज्वल्यमान नक्षत्र थे दयानन्द। – **लोकमान्य तिलक**

२– आधुनिक भारत के आद्यनिर्माता तो दयानन्द ही थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने स्वराज्य की प्रथम घोषणा करते हुए, आधुनिक भारत का निर्माण किया। हिन्दू समाज का उद्धार करने में आर्यसमाज का बहुत बड़ा हाथ है। – **नेता जी सुभाष चन्द्र बोस**

३– सत्य को अपना ध्येय बनायें और महर्षि दयानन्द को अपना आदर्श । – **स्वामी श्रद्धानन्द**

४– महर्षि दयानन्द इतनी बड़ी हस्ती हैं कि मैं उनके पाँवके जूते के फीते बाँधने लायक भी नहीं। – **ए .ओ.ह्यूम**

५–स्वामी जी ऐसे विद्वान् और श्रेष्ठ व्यक्ति थे,जिनका अन्य मतावलम्बी भी सम्मान करते थे।–**सर सैयद अहमद खां**

६– आदि शङ्कराचार्य के बाद बुराई पर सबसे निर्भीक प्रहारक थे दयानन्द। – **मदाम ब्लेवेट्स्की**

७– ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव लोगों को कारागार से मुक्त कराने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। उनका आदर्श है–आर्यावर्त ! उठ, जाग, आगे बढ़। समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर।– **फ्रेंच लेखक रिचर्ड**

८– गान्धी जी राष्ट्र–पिता हैं, पर स्वामी दयानन्द राष्ट्रपितामह हैं। – **पट्टाभि सीतारमैया**

९– भारत की स्वतन्त्रता की नींव वास्तव में स्वामी दयानन्द ने डाली थी। स्वामी दयानन्द के राष्ट्रप्रेम के लिए उनके द्वारा उठाये गए कष्टों, उनकी हिम्मत, ब्रह्मचर्य जीवन और अन्य कई गुणों के कारण मुझको उनके प्रति आदर है। उनका जीवन हमारे लिए आदर्श बन जाता है। भारतीयों ने उनको विष पिलाया और वे भारत को अमृत पीला गए। यदि हम महर्षि दयानन्द की नीतियों पर चलते तो देश कभी नही बंटता। आज देश में जो भी कार्य चल रहे हैं, उनका मार्ग स्वामी जी ने वर्षों पूर्व बना दिया था । – **सरदार वल्लभ भाई पटेल**

१०– स्वामी दयानन्द पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने आर्यावर्त (भारत) आर्यावर्तीयों (भारतीयों) के लिए है की घोषणा की। सारे स्वतन्त्रता सेनानियों का एक मंदिर खड़ा किया जाय तो उसमें महर्षि दयानन्द मंदिर की चोटी पर सबसे ऊपर होंगे। **–एनी बेसेन्ट**

११– महर्षि दयानन्द स्वाधीनता संग्राम के सर्वप्रथम योद्धा थे। स्वतन्त्रता के संग्राम में आर्य समाजियों का बड़ा हाथ रहा है। महर्षि जी का लिखा अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश हिन्दू जाति की रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला है। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता मे कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं बघार सकता। **–वीर सावरकर**

१२– ऋषि दयानंद की ज्ञानाग्नि विश्व के मूलभूत अक्षर तत्त्व का अद्भुत उदाहरण है।– **डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल**

१३– ऋषि दयानन्द के द्वारा की गई वेदों कि व्याख्या की पद्धति बौधिकता, उपयोगिता, राष्ट्रीयता एव हिंदुत्व के परम्परागत आदेशों के अद्भुत योग का परिणाम हैं। – **एच. सी. ई. जैकेरियस**

१४– दयानन्द दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक था, विश्व को प्रभु के शरणों में लाने वाला योद्धा और मनुष्य व संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्माओं के मार्ग से उपस्थित की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था। **– योगी अरविन्द**

१५– मुझे स्वाधीनता संग्राम में सर्वाधिक प्रेरणा महर्षि दयानन्द के ग्रंथों से मिली है। – **दादा भाई नैरोजी**

१६ – हमें वेदों के अध्ययन को प्रोत्साहन देने के लिए और यह सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेद सम्मत नही है, स्वामी दयानन्द के महान् उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। आर्यों के प्रवर्तक वर्तमान जातिभेद की मूर्खता और उसकी हानियों के विरुद्ध अपने अनुयायियों को तैयार करने के अतिरिक्त और कुछ भी न करते तो भी वे वर्तमान भारत के बड़े नेता के रूप में अवश्य सम्मान पा जाते। – **डॉ विण्टरनीज जर्मन विद्वान्**

१७– मैंने राष्ट्र, जाति और समाज की जो सेवा की है उसका श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है।
– श्याम जी कृष्ण वर्मा

१८– स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्ही को गुरु माना है। वे मेरे धर्म के पिता हैं और आर्यसमाज मेरी धर्म की माता है। इन दोनों की गोदी में मैं पला हूँ, मुझे इस बात का गर्व है कि मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रता का पाठ पढ़ाया। – **पंजाब केसरी लाला लाजपत राय**

१९– राजकीय क्षेत्र मे अभूतपूर्व कार्य करने वाले महर्षि दयानन्द महान् राष्ट्रनायक और क्रान्तिकारी महापुरुष थे। उन्होंने स्वराज्य और स्वदेशी की ऐसी लहर चलाई कि जिससे इण्डियन नेशनल कांग्रेस के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार हो गयी। **– लाल बहादुर शास्त्री**

२०– मैं उस प्रचण्ड अग्नि को देख रहा हूँ जो संसार की समस्त बुराइयों को जलाती हुई आगे बढ़ रही है वह आर्यसमाज रूपी अग्नि जो स्वामी दयानन्द के हृदय से निकली और विश्व मे फैल गयी।
– **अमेरिकन पादरी एण्ड्यू जैक्सन**

२१ – मेरा सादर प्रणाम है उस महान् गुरु दयानन्द को जिनके मन से भारतीय जीवन के सब (राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक) अंगों को प्रदीप्त कर दिया। मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदर पूर्वक श्रद्धांजलि देता हूँ। **– रवीन्द्रनाथ टैगोर**

२२ – स्वामी दयानन्द एक विद्वान् थे। उनके धर्म नियमों की नींव ईश्वर कृत वेदों पर आधारित थी। उन्हे वेद कण्ठस्थ थे। उनके मन और मस्तिष्क मे वेदों ने घर किया हुआ था। वर्तमान समय में संस्कृत व्याकरण का एक ही बडा विद्वान् साहित्य का पुतला, वेदों के महत्व को समझने वाला अत्यन्त प्रबल नैयायिक और विचारक यदि भारत में हुआ है तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती ही थे। **– मैक्समूलर**

२३ – स्वराज्य आन्दोलन के प्रारम्भिक कारण स्वामी दयानन्द की गिनती भारत के निर्माताओं में सर्वोच्च है। वे भारत के कीर्ति स्तम्भ थे जहाँ–जहाँ आर्यसमाज वहाँ–वहाँ क्रान्ति (विद्रोह) की आग है।
– ग्रास ब्रोण्ड (एक अंग्रेज अधिकारी)

२४– डी०ए०वी० यानी दयानन्द आर्य वैदिक स्कूल में हम सब भाइयों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने का अवसर मिला। हमारे विचारों और मानसिक उन्नति के निर्माण मे सबसे बड़ा हाथ आर्यसमाज का ही है। हम सब इसके लिए आर्यसमाज के ऋणी हैं। **– अमर क्रान्तिकारी भगत सिंह**

२५– महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी विचारों से युक्त सत्यार्थ प्रकाश ने मेरे जीवन के इतिहास में एक नया पृष्ठ जोड़ दिया। – **अमर क्रान्तिकारी रामप्रसाद बिस्मिल**

२६– अगर आर्यसमाज न होता तो भारत की क्या दशा हुई होती इसकी कल्पना करना भी भयावह है। आर्यसमाज का जिस समय काम शुरु हुआ था कांग्रेस का कहीं पता ही नही था। स्वराज्य का प्रथम उद्घोष महर्षि दयानन्द ने ही किया था। यह आर्यसमाज ही था जिसने भारतीय समाज की पटरी से उतरी गाड़ी को फिर से पटरी पर लाने का कार्य किया। अगर आर्यसमाज न होता तो भारत–भारत न होता। – अटल बिहारी बाजपेयी

२७– महर्षि दयानन्द सरस्वती राष्ट्र के पितामह थे। वे राष्ट्रीय प्रवृत्ति और स्वाधीनता के आन्दोलन के प्रथम प्रवर्तक थे।

– अनन्त शयनम् आयंगर

२८– महर्षि दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि हिन्दुस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों, श्रेष्ठ पुरुषों में अग्रणी थे, उनका ब्रह्मचर्य, विचार स्वातन्त्रय, स्वराज्य सर्वप्रति प्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे।

– महात्मा गाँधी

२६– महर्षि दयानन्द ने राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक उद्धार का बीड़ा उठाया। स्वामी जी ने स्वराज्य का जो पहला सन्देश हमें दिया उसकी रक्षा हमें करनी है। उनके उपदेश सूर्य के समान प्रभावशाली हैं।

– डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन।

३०– हिंदुत्व कि रक्षा के मोर्चे पर सर्वप्रथम आक्रामक नीति अपनाने का श्रेय स्वामी दयानन्द को जाता है। सत्य के रणारूढ़ हिंदुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए वैसा कोई नहीं हुआ। धर्म च्युत हिन्दू एवं अहिन्दू को हिन्दू धर्म में सर्वप्रथम प्रवेश कराने वाले स्वामी दयानन्द थे। हिंदुत्व के बुद्धि सम्मत रूप को आगे लाकर यूरोप के बुद्धिवाद के समक्ष हिंदुत्व को खड़ा करने का श्रेय स्वामी दयानन्द को जाता है। परिवर्तन जब धीरे धीरे आता है तब सुधार कहलाता है किन्तु जब वही तीव्र वेग से पहुँच जाता है, तब उसे क्रान्ति कहते हैं। दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये।

– राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर

३१– महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर भी मनुष्य होता है। इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता।

– महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला

३२– मैं स्वामी दयानन्द का चित्र इस कारण से अपने कमरे में लटकाये हुए हूं कि स्वामी जी के जीवन का उच्च्व व पवित्र आचरण सदामेरे नयनों के सम्मुख रहे। जिस घड़ी सांसारिक लोगों के व्यवहार से मेरा मन ऊब जाये, जिस समय प्रलोभनों के कारण पग डगमगाये अथवा प्रतिशोध की भावना मेरे मन में लहरें लेने लगे अथवा जीवन की कठिन राहें मेरे साहस व शौर्य की अग्नि को मन्द करने लगें, उस विकट वेला में उस पवित्र मोहिनी मूर्ति के दर्शनों से आकुल व्याकुल हृदय को शान्ति हो। दृढ़ता धीरज बने रहें। क्षमा व सहनशीलता के मार्ग पर पग चलते चलें तथा मैं अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि इस चित्र से मुझे लाभ पहुंचा है और एक बार नहीं कई बार।

– मुंशी प्रेमचंद

दीवाली और दयानन्द

याद करो आज से ठीक 136 वर्ष पूर्व दीवाली की उस सन्ध्या को जब वर्तमान युग–प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने जीवन की सन्ध्या समाप्त होने से पूर्व जगत् के असंख्य बुझे दीपकों को प्रज्वलित किया और हम से सदा–सदा के लिये विदा हो गए। ईश्वर की लीला देखिये – दीवाली की उस काली अमावस्या में एक ओर संसार के लोग दीवाली की खुशियाँ मना रहे थे और दूसरी ओर 'आर्य समाज' में मातम छा गया क्योंकि आर्य समाज का सूर्य सदा के लिये अस्त हो गया। 'आर्य समाज' के इतिहास का एक पन्ना अन्धेरे से काला हो गया तथा एक प्रज्वलित चमकते सूर्य को सदा के लिये ग्रहण लगा दिया। उसी दिन महर्षि दयानन्द का अजमेर में देहावसन हुआ था।

दीवाली का पर्व हमें दो बातों की याद दिलाता है – एक, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र की अयोध्या में वापसी की तथा दूसरे, आधुनिक युग–प्रवर्तक और महान सुधारक महर्षि दयानन्द सरस्वती (**आर्य समाज** के संस्थापक) की, जिनकी पुण्य–तिथि दीवाली के ही दिन पड़ती है। जब–जब 'दीवाली' (दीपावली अर्थात् प्रज्वलित दीपकों की लडियाँ या वलियाँ) अर्थात् 'प्रकाश' का चमचमाता हुआ त्योहार आएगा तब–तब 'आर्य समाज' के असंख्य सदस्यों को ही नहीं अपितु विश्व के अनेक बुद्धिजीवी लोगों को 'बाल–ब्रह्मचारी देव दयानन्द' के जीवन की अनेक घटनाएँ याद आती रहेंगी। श्री रामचन्द्र और महर्षि दयानन्द यद्यपि आज हमारे बीच नहीं हैं परन्तु जब तक सूर्य और चन्द्रमा में भौतिक प्रकाश रहेगा तब तक लोग दीपावली का त्यौहार मनाते रहेंगे और उन महान आत्माओं को याद करते रहेंगे।

आर्यवर्त (आधुनिक 'भारत') के लोग पिछले नौ लाख वर्षों से दीपावली का त्योहार मनाते आ रहे हैं और वह भी केवल दिवाली के अवसर पर ही अपने मकानों की सफाई कर और रात्रि के समय उसे दीपक जलाकर (आधुनिक समय में छोटी–बड़ी बत्तियों की सहायता से) रौशन करते हैं क्योंकि आज से लगभग नौ लाख वर्ष पूर्व (त्रोता युग की समाप्ति के समय) अमावस्या की सन्ध्या वेला में, चौदह वर्ष की वनवास की अवधि पूर्ण कर, मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र का अयोध्या नगरी में आगमन हुआ और वहाँ के रहवासियों ने श्री राम के स्वागत् में अपने–अपने मकानों के बाहर घी के दिये जलाकर अपनी प्रसन्नता को प्रदर्शन किया और वही परम्परा आज भी जारी है। दीवाली से प्रेरणा लेनी चाहिये कि हम भी अपने हृदयदेश की शुद्धि करें, अन्दर में जमे काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष, मान–अपमान, अहंकार इत्यादि मैल की सफाई करें और उसके स्थान पर धर्म के लक्षणों को धारण करें, यम–नियमों का पालन करें। बाहर की सफाई से अन्दर की शुद्धता का महत्व अधिक होता है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती 19वीं शताब्दी के एक ऐसे योगीराज ब्रह्मचारी हुए हैं जिन्होंने सच्चे शिव की खोज में अपना जीवन लगा दिया और विश्व के लागों को भी सच्चे शिव के दर्शन कराये। दीवाली की सन्ध्या (ई० सन् 1883 आज से ठीक 136 वर्ष पूर्व) को महर्षि ने अजमेर में प्राण त्यागते हुए और जो अन्तिम शब्द कहे, वे विचारणीय हैं **हे ईश्वर!– तेरी इच्छा पूर्ण हो** – ये उनके सच्चे 'ईश्वर प्रणिधान' की भावना को दर्शाते हैं।